Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नवीन संकलन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नवीन संकलन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(Hindi)

Naveen Samkalan

Compiled by:
A committee appointed by
The University of Kerala

Type setting :
Abi Design and Pre-press
Thiruvananthapuram

Printing :
Kerala University Press

Cover design :
Godfrey Das

First Edition: 2017
Reprint: 2019, 2021, 2022

Published by :
Dr. Mini Dejo Kappen,
Director (i/c), Department of Publications
University of Kerala
Thiruvananthapuram-34.

Price : Rs. 60

KUDP 391 - TBDL HI ED IV - 22 - 3 - 2

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नवीन संकलन

प्रकाशन विभाग, केरल विश्वविद्यालय

तिरुवनन्तपुरम

2022

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

MEMBERS OF THE EDITORIAL BOARD

Dr. Girijakumari R. (Chairperson, B.O.S)

Dr. J. Francis (Convenor)

Dr. S. Suma

Dr. Lekha S. Nair

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय सूची

भाग - I

बडे घर की बेटी : प्रेमचन्द 3

शिवजी की बारात : विद्यानिवास मिश्र 17

गिल्लू : महादेवी वर्मा 22

ठेले पर हिमालय : धर्मवीर भारती 29

स्वामी दयानन्द : मोहन राकेश 39

पत्रव्यवहार 47

भाग - II

साखी : कबीरदास 75

पद : सूरदास 78

दोहे : बिहारी 81

ले चल वहाँ भुलावा देकर : जयशंकर प्रसाद 83

विधवा : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला 86

यह मनुज : रामधारी सिंह दिनकर 89

एकलव्य : कीर्ति चौधरी 92

बन्द खिडकियों से टकराकर : गोरख पाण्डे 94

रचना परिचय और शब्दार्थ

अनुवाद

पारिभाषिक शब्दावली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग - I

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बडे घर की बेटी

प्रेमचन्द

हिन्दी के महान कथाकार प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 ई को वाराणसी के पास लमही नामक ग्राम में हुआ था। मुंशी अजायबलाल श्रीवास्तव ने अपने पुत्र का नाम धनपतराय रखा और ताऊ उन्हें अजायबलाल कहते थे। इन्होंने हाई स्कूल तक नियमित रुप से अध्ययन किया था। उसके बाद बी.ए. तक की शिक्षा व्यक्तिगत रुप से उत्तीर्ण की थी। अध्ययन काल में इन्हें आर्थिक समस्याओं से जूझना पडा किन्तु परिश्रम और लगन से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहे। कुछ दिन तक अध्ययन कार्य करने के बाद इन्होंने पाठशाला निरीक्षक का कार्य संभाला। 1921 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने केलिए नौकरी छोड़ दी।

प्रेमचन्द की प्रतिष्ठा कथा सम्राट के रूप में है। विद्वानों ने बीसवीं शती के विश्व साहित्य के तीन महान साहित्यकारों में उनकी गणना की है। 1909 ई में जब उनका कहानी संग्रह 'सोजेवतन' राजद्रोहपूर्ण कहानियाँ लिखने के कारण जब्त कर लिया गया तब इन्होंने अपना नाम प्रेमचन्द रख लिया। इन्होंने तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक हलचल एवं समस्याओं को अपनी रचनाओं में अंकित किया। इन्होंने हिन्दी कहानी में सामान्य जन की प्रतिष्ठा की। इस

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महान देश के दीन दुःखियों, कृषकों, मज़दूरों आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाया। प्रेमाश्रम, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, गोदान आदि इनके चर्चित उपन्यास हैं। इनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' में संग्रहीत की गयी है। प्रेमचन्द महान कथाकार के साथ ही कुशल संपादक भी थे। हंस, जमाना आदि उनकी पत्रिकाएँ हैं। 8 अक्टूबर 1936 ई को इस लोकप्रिय कथाकार का देहावसान हो गया।

बडे घर की बेटी उर्दू पत्र 'जमाना' में प्रकाशित प्रेमचन्द की कहानी है। इस कहानी में उन्होंने पहले पहल प्रेमचन्द नाम रख लिया था। यह उनकी अत्यन्त प्रसिद्ध कहानी है। आनन्दी को केन्द्र में रखकर प्रेमचन्द ने इस कहानी का सृजन किया है। लालबिहारी देवर के अशिष्ट व्यवहार से क्षुब्ध पति की अनुपस्थित में भी बडे घर की बेटी अपने बडप्पन की लाज रखती है। इस कहानी के आधार पर प्रेमचन्द ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि नारी जाति के आधार पर नहीं संस्कार के आधार पर बड़ी होती है। वर्तमान भारतीय जीवन में आनन्दी जैसी नारियों की सख्त आवश्यतका है क्योंकि वह सद्भावपूर्ण व्यवहार के आधार पर घर को टूटने से बचाती है। बेनी माधव ने जब यह हाल सुना तो वे दोनों भाइयों को गले मिलते देखकर पुलकित हो गये और बोल पडे कि बडे घर की बेटियाँ ऐसी होती है।' गाँव में जिस किसी ने यह वृत्तान्त सुना उसी के इन शब्दों में आनन्दी की उदारता को सराहा कि 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती है।

बड़े घर की बेटी

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के ज़मीन्दार और नम्बरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धनधान्य - सम्पन्न थे। गाँव का पक्का
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
तालाब और मन्दिर, जिसकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कीर्तिस्तम्भ थे। कहते हैं, इस दरवाज़े पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह पर एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती थी; क्योंकि एक न एक आदमी हाँड़ी लिये उसके सर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक सम्पत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय वार्षिक एक हज़ार से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकण्ठसिंह था। उन्होंने बहुत दिनों तक परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफ्तर में नौकर थे। छोटा लड़का लाल बिहारी सिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था - मुखड़ा भरा हुआ, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजडा दूध वह सवेरे उठ पी जाता था। श्रीकण्ठ सिंह की दशा उससे बिल्कुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होंने इन्हीं दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने इनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वैद्यक ग्रन्थों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। साँझ-सवेरे उनके कमरे से प्रायः खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनायी दिया करती थी। लाहौर और कलकत्ता से वैद्यों से बड़ी लिखा - पढ़ी रहती थी।

श्रीकण्ठ इस अंग्रेज़ी डिग्री के अधिपति होने पर भी अंग्रेज़ी सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे। बल्कि वह बहुथा बड़े ज़ोर से इनकी निन्दा और तिरस्कार किया करते थे। इसी से गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वह बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी न किसी पात्र का पार्ट लेते थे। गौरीपुर में रामलीला के वे ही जन्मदाता थे। प्राचीन हिन्दू सभ्यता का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा के तो वे एक मात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों की कुटुम्ब में मिल - जुलकर प्रथा के तो वे एक मात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों की कुटुम्ब में मिल - जुलकर रहने की ओर जो अरुचि होती है. उसे वे जाति और देश के लिए बहुत ही हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ उनकी निन्दक थी, कोई कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थी, स्वयं उनकी पत्नी को ही इस विषय में उन से विरोध था। वह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास, ससुर, देवर, जेठ से घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहन करने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आये दिन की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचडी अलग पकायी जाय।

आनन्दी एक बड़े कुल की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी सी रियासत के ताल्लुकेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहली, सिकरे झाड़फानूस आनरेरी मजिस्ट्रेटी और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के योग्य पदार्थ हैं, वह सभी यहाँ विद्यमान थे। भूपसिंह नाम था। बड़े उदार प्रतिभाशाली पुरुष थे। पर दुर्भाग्यवश लड़का एक भी न था। सात लड़कियाँ हुई और दैवयोग से सब जीवित रहीं। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किये, पर जो पन्द्रह बीस हज़ार का कर्ज सिर पर लद गया, तो आँख खुली, हाथ समेट लिया। आनन्दी चौथी लड़की थी। वह अपनी सब बहिनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी, इसी से ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। सुन्दर सन्तान को कदाचित उनके माता पिता भी अधिक चाहते हैं। ठाकुर साहब बड़े धर्म संकट में थे कि इसका विवाह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ करें, न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े। एक दिन श्रीकण्ठ उनके पास किसी चन्दे का रुपया माँगने आये। शायद नागरी प्रचार का चन्दा था। भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गये और धूमधाम से श्रीकण्ठ सिंह का आनन्दी के साथ विवाह हो गया।

आनन्दी अपने नये घर में आयी तो यहाँ का रंग-ढंग कुछ और देखा। जिस टीमटाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाममात्र को भी न थी। हाथी घोड़ा की तो बात ही क्या, कोई सजी हुई सुन्दर बहली तक न थी! रेश्मी स्लीपर साथ लायी थी, पर यहाँ बाग कहाँ! मकान में खिड़कियाँ तक न थीं, न ज़मीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीर। यह एक सीधे सीधे देहाती गृहस्थ का मकान था। किन्तु आनन्दी ने थोड़े ही दिनों में अपने को इस नयी अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे।

2

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह चिड़िया लिये हुए आया और भावज से बोला, 'जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है।' आनन्दी भोजन बनाकर इनकी राह देख रही थी। अब यह नया व्यंजन बनाने बैठी। हाँड़ी में देखा तो घी पांव भर से अधिक न था। बड़े धर की बेटी किफायत क्या जाने! उसने सब घी मांस में डाल दिया। लालबिहारी खाने बैठा, तो दाल में घी न था, बोला 'दाल में घी क्यों न छोड़ा?'

आनन्दी ने कहा, 'घी सब मांस में पड़ गया' लालबिहारी ज़ोर से बोला, 'अभी परसों घी आया है, इतनी जल्दी उठ गया?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आनन्दी ने उत्तर दिया, 'आज तो कुल पाव भर रहा होगा। वह सब मैंने मांस में डाल दिया।'

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य ज़रा ज़रा बात पर तिनक जाता है।

लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई। तिनक कर बोला 'मैके में तो चाहे घी की नदी बहती है।'

स्त्रियाँ गालियाँ सब लेती हैं, मार सह लेती हैं, पर मैके की निन्दा उससे नहीं सही जाती। आनन्दी मुँह फेरकर बोली, 'हाथी मरा भी तो नौ लाख का, वहाँ इतना घी नित्य नाई कहार खा जाते हैं।'

लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पटक दी और बोला, 'जी चाहता है कि जीभ पकड़ कर खींच लूँ।'

आनन्दी को क्रोध आया। मुँह लाल हो गया; बोली, 'वह होते तो आज इसका मज़ा चखा देते।'

अब अपढ़, उजड्ड ठाकुर से न रहा गया। उसकी स्त्री एक साधारण ज़मीन्दार को बेटी थी। जब चाहता उस पर हाथ साफ कर लिया करता था। उसने खड़ाऊँ उठाकर आनन्दी को ओर ज़ोर से फेंकी और बोला, 'जिसके गुमान पर फूली हुई हो, उसे भी देखूँगी और तुम्हें भी।'

आनन्दी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी, सिर बच गया, पर अंगुली में बड़ी चोट आई। क्रोध के मारे वहाँ से हिलते हुए पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आकर खड़ी हो गयी। स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति ही के बल और पुरुषत्व का घमण्ड होता है। आनन्दी लहू का घूँट पीकर रह गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

श्रीकण्ठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनन्दी कोप-भवन में रही। न कुछ खाया न पीया; उनकी बाट देखती रही। अन्त में शनिवार को वह नियमानुकूल संध्या समय घर आये और बाहर बैठकर कुछ इधर उधर की बात, कुछ देश और काल सम्बन्धी समाचार तथा कुछ नये मुकदमों आदि की चर्चा करने लगे। यह वार्तालाप दस बजे रात तक होता रहा। गाँव के भद्र पुरुषों को इन बातों से ऐसा आनन्द मिलता था कि खाने पीने की भी सुधि न रहती थी। श्रीकण्ठ को पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। यह दो तीन घण्टे आनन्दी ने बड़े मुश्किल से काटे। किसी तरह भोजन का समय आया। पंचायत उठी। जब एकान्त हुआ तब लालबिहारी ने कहा - भैया, आप ज़रा घर में समझा दीजिएगा कि मुँह संभालकर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायेगा।

बेनीमाधव सिंह ने बेटे की ओर साक्षी दी, 'हाँ, बहू-बेटियों का यह स्वभाव, अच्छा नहीं कि पुरुषों के मुहँ लगें। लाल बिहारी- वह बडे घर की बेटी है, तो हम लोग भी कोई नाई-कहार नहीं है।

श्रीकण्ठ ने चिन्तित स्वर से पूछा, 'कुछ भी नहीं, यों ही आप ही-आप उलझ पड़ी। मैके के सामने हम लोगों को कुछ समझती ही नहीं।'

श्रीकण्ठ खा पीकर आनन्दी के पास गये। वह भरी बैठी थी! यह भी ज़रा कुछ तीखे थे। आनन्दी ने पूछा, 'चित्त तो प्रसन्न है?'

श्रीकण्ठ बोले 'बहुत प्रसन्न है, पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है?'

आनन्दी की तेवरियों पर बल पड़ गये और झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला सी दहक उठी। बोली, 'जिसने तुमसे यह आग लगायी है, उसे पाऊ तो मुँह झुलस दूँ।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीकण्ठ-इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो।

आनन्दी - क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है। नहीं तो एक गँवार छोकरा, जिसको चपरासगीरी करने का भी ढंग नहीं, मुझे खाडाऊँ से मारकर यों न अकड़ता।

श्रीकण्ठ - सब साफ साफ हाल कहो, तो मालूम हो। मुझे तो कुछ पता नहीं।

आनन्दी - परसों तुम्हारे लाड़ले भाई ने मांस पकाने को कहा। घी हाँडी में पाव भर से अधिक न था। वह मैंने मांस में डाल दिया। जब खाने बैठा, तो कहने लगा, दाल में घी क्यों नहीं है। बस इसी पर मेरे मैके को भला बुरा कहने लगा। मुझसे न रहा गया, मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो नाई कहार खा जाते हैं और किसी की जान भी नहीं पड़ता। बस इतनी सी बात पर इस अन्यायी ने मुझ पर खड़ाऊँ फेंक मारी। यदि हाथ से रोक न लेती, तो सिर कट जाता। उसी से पूछो कि मैंने जो कुछ क़हा है, वह सच है या झूठ।

श्रीकण्ठ की आँखे लाल हो गयी। बोले, 'यहाँ तक हो गया इस छोकरे का यह साहस।

आनन्दी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी, क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते है। श्रेकण्ठ बड़े धैर्यवान और शान्त पुरुष थे। उन्हें कदाचित् ही कभी क्रोध आता था, पर स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं। रात भर करवट बदलते रहे। उद्विग्नता के करण पलक तक नहीं झपकी। प्रातःकाल अपने आप के पास जाकर बोले, दादा, अब इस घर में मेरा निर्वाह न होगा।'

इस तरह की विद्रोहपूर्ण बात करने पर श्रीकण्ठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था। परन्तु दुर्भाग्य। आज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें स्वयं वही बात अपने मुँह से कहनी पड़ी। दूसरों को उपदेश देना भी कितना सहज है।

बेनीमाधव सिंह घबड़ाकर उठे और बेले, 'क्यों'?'

श्रीकण्ठ - इसीलिए कि मुझे भी अपनी मान प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में सब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर सम्मान करना चाहिए; वह उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरों का चाकर ठहरा, घर पर रहता नहीं, यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछार होती है। कड़ी बात तक चिन्ता नहीं, कोई एक की दो कह ले, यहाँ तक मैं सह सकता हूँ। किन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात-घूँसे पड़े और मैं दम न मारूँ।

बेनीमाधव सिंह कुछ जवाब न दे सके, श्रीकण्ठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देखकर बूढ़े ठाकुर अवाक् रह गये। केवल इतना ही बोले, 'बेटा, तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बात करते हो? स्त्रियाँ इसी तरह घर का नाश कर देती है। उनको सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।'

श्रीकण्ठ इनता मैं जानता हूँ, आपके आशीर्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने-बुझाने से इसी गाँव में कई घर सम्भल गये, पर जिस स्त्री की मान प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके साथ ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिये, मेरे लिए यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दण्ड नहीं देता।

अब बेनीमाधव भी गरमाये। ऐसी बातें और न सुन सके। बोले, 'लालबिहारी तुम्हारा भाई है, उससे जब कभी भूल हो, उसके कान पकड़ो। लेकिन....'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीकण्ठ - लालबिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव-स्त्री के पीछे?

श्रीकण्ठ - जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर तक चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे, लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारी ने कोई अनुचित काम किया है। इसी बीच गाँव के और कई सज्जन हुक्का चिलम के बहाने वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियों ने जब यह सुना कि श्रीकण्ठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने पर तैयार है तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्ष की मधुर वाणियाँ सुनने केलिए उनकी आत्माएँ तिलमिलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुल की नीतिपूर्ण पति पर मन ही मन जलते थे। वे कहा करते थे, श्रीकण्ठ अपने बाप से दबता है, इसलिए वह दब्बू है। उसने इतनी विद्या पढ़ी, इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाद्यव सिंह उसकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते, यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभ कामनायें आज पूरी होती दिखायी दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखलाने के बहाने आ आकर बैठ गये। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे; इन भावों को ताड़ गये। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरन्त कोमल शब्दों में बोले, 'अब तो लड़के से अपराध हो गया।'

इलाहाबाद का अनुभवरहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट इस बात को न समझ सका। उसे डिंबेटिंग क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकण्डों की उसे क्या खबर। बाप ने जिस मतलब से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बात पलटी थी वह उसकी समझ में न आया, बोला- मैं लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव-बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खों की बातों पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा कर दो।

श्रीकण्ठ-उसकी इस दुष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता, या तो वह घर में रहेगा, या मैं ही रहूँगा। आपको यदि वह अधिक प्यारा है, तो मुझे विदा कीजिए, मैं अपना भार आप सम्भाल लूँगा। यदि मुझे रखना चाहते हैं, तो उससे कहिए, जहाँ चाहे चला जाय। बस यही मेरा अन्तिम निश्चय है।

लालबिहारी दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा हुआ बड़े भाई की बातें सुन रहा था। यह उनका आदर करता था। उसे कभी इतना साहस नहीं हुआ था कि श्रीकण्ठ के सामने चारपाई पर बैठ जाय हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप की भी वह इतना मान न करता था। श्रीकण्ठ का भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक नहीं था। जब इलाहाबाद से आते, तो उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते। मुग्दर की जोड़ी भी उन्होंने बनवा दी थी। पिछले साल उसने जब अपने से ड्योढ़े जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में जाकर उसे गले से लगा लिया था। पाँच रुपये के पैसे लुटाये थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी हृदयविदायक बात को सुनकर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई। वह फूट फूटकर रोने लगा। इस में सन्देह नहीं कि वह अपने किये पर आप पछता रहा था। भाई के आने के एक दिन पहले से उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं। मैं उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँख उनके सामने कैसे उठेगी? उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उन्हें निर्दया की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था, परन्तु उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकण्ठ उसे अकेले में बुलाकर दो चार कड़ी बात कह देते, इतना ही नही, दो चार तमाचे भी लगा देते, तो कदाचित् उसे इतना दुःख न होता, पर भैया का यह कहना कि अब मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से सहा नहीं गया। वह रोता हुआ घर में आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछीं, जिससे कोई यह न समझ सके कि रोता था। तब आनन्दी के द्वार पर आकर बोला भाभी। भैया ने निश्चय किया है कि वे मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। वे अब मेरा मुँह नहीं देखना चाहते। इसलिए मैं अब जाता हूँ, फिर उन्हें मूँड़ न दिखाऊँगा। मुझसे जो अपराध हुआ हो, क्षमा करना।

यह कहते कहते लालबिहारी का गला भर आया।

4

जिस समय लालबिहारी सिर झुकाए आनन्दी के द्वार पर खड़ा था, इसी समय श्रीकण्ठ सिंह भी आँखें लाल किया बाहर से आये। भाई को खड़ा देखा तो घृणा से आँखें फेर लीं और कतराकर निकल गये, मानो उसकी परछाइ सें दूर भागते हों।

आनन्दी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी, लेकिन अब मन में पछता भी रही थी। वह स्वभाव से ही दयावती थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बिगड़ जायेगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते हैं। उस पर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहें, तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे करूँर्गा। इसी बीच जब उसने लालबिहारी को दरवाज़े पर खड़े यह कहते सुने कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ है, उसे क्षमा करना, तो उसका रहा सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने केलिए नयन जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकण्ठ को देखकर आनन्दी ने कहा, 'लाला बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।'

श्रीकण्ठ - तो मैं क्या करूँ?

आनन्दी - भीतर बुला लो। मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया।

श्रीकण्ठ - मैं न बुलाऊँगा।

आनन्दी - पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो गयी है ऐसा न हो, कही चल दें।

श्रीकण्ठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा, 'भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें न दिखाऊँगा।'

लालबिहारी इतना कहकर लौट पड़ा और शीघ्रता से दरवाज़े की ओर बढ़ा। अन्त में आनन्दी कमरे से निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिरकर देखा और आँखों में आँसू भरे बोला, 'मुझे जाने दो।'

आनन्दी - कहाँ जाते हो?

लालबिहारी - जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आनन्दी - मैं न जाने दूँगी।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लालबिहारी -तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।

आनन्दी - तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।

लालबिहारी - जब तक मुझे यह न मालूम हो जाय कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया, तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा।

आनन्दी - मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।

अब श्रीकण्ठ का भी हृदय पिघला। उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले लगा लिया। दोनों भाई खूब फूट फूटकर रोये। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा, 'भैया! अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मूँह न देखूँगा। इसके सिवा आप जो दण्ड देंगे, वह सहर्ष स्वीकार करूँगा।'

श्रीकण्ठ ने काँपते हुए स्वर में कहा - लल्लू! इन बातों को बिलकुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा तो अब फिर ऐसा अवसर न आवेगा।

बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे थे। ये दोनों भाइयों को गले मिलते देखकर आनन्द से पुलकित हो गये, बोल उठे, 'बड़े घर की बटियाँ ऐसी ही होती है। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।'

गाँव में जिसने यह वृत्तान्त सुना, उसी ने इन शब्दों में आनन्दी की उदारता को सहारा, 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिवजी की बारात

विद्यानिवास मिश्र

डॉ. विद्यानिवास मिश्र का जन्म गोरखपुर (उ.प्र) जनपद के पकड़ डीहा गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर में हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने संस्कृत में एम.ए. किया और गोरखपुर विश्वविद्यालय में पी.एच.डी। देश-विदेश के अनेक उच्च संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में इन्होंने अध्यापन कार्य किया।

मिश्र जी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी के पण्डित थे। भाषा विज्ञान में इन्होंने स्तरीय कार्य किया है। हज़ारीप्रसाद द्विवेदी की ललित निबन्धों की परम्परा को इन्होंने अग्रसर किया है। छितवन की छाँह, कदम की फूल डाल, तुम चन्दन हम पानी, आंगन का पंछी और बनजारा मन, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, आदि इनके निबन्धों के संग्रह है।

'शिवजी की बारात, तुम चन्दन हम पानी' शीर्षक संग्रह से लिया गया है। लोक कथाओं में शिव और पार्वती का हस्तक्षेप बराबर दिखाई देता है। मिश्रजी ने शिव के द्वितीय विवाह के प्रसंग को इस निबन्ध में अंकित किया है। आधुनिक संवेदना और शब्दावली को शिव के पौराणिक चरित्र पर आरोपित करने से उसका एक अत्यन्त व्यंग्यात्मक एवं आस्वादनीय स्वरूप बन गया है। लेखक की विशेष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है कि बारात की प्रथा, वृद्ध विवाह का अधिकार, गणेश जी की द्वार पूजा, दूसरी पत्नी का वर्चस्व आदि शिवजी के विवाह के समय से ही स्थापित हुए हैं। व्यंग्य और लालित्य इन निबन्ध की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

पहली पत्नी सती देवी जल कर मरी तो कुछ दिन तो शिव बाबा उन्हीं के शोक में पागल रहे, यहाँ तक कि भूत प्रेतों से उन्होंने संगति कर ली और मसान में ही धूनी रमाने लगे। कैलास का आश्रम उजड़ चला, कुबेर भण्डारी अलकापुरी में ताला लगाकर इन्द्र के दरबार में मुजरा सुनने चले गए। 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' चरितार्थ होते ही शिव बाबा ने दीन दुनिया से वैराग्य ले लिया। अब लम्बोदर गणेशजी को चूल्हा सैंकना पड़ा, सो खाने के लिए तो दो हाथों के अलावा सूड़ का भी सदुपयोग करने में वे कुशल थे, पर रसोई बनाने में उन्हें अपनी अम्मा का दूध याद आने लगा और उन्होंने काम छोड़ने का बाकायदा नोटिस दे दिया। बूढ़े नन्दी को भी अब गोग्रास मिलना बन्द सा हो गया और जब तब इस श्मशान से उस श्मशान तक फेरी लगाने से वे असहयोग करने लगे। फलतः शिवजी ने अन्तरंग कैबिनेट की बैठक बुलवायी। अन्तरंग कैबिनेट में जैसा कि विश्व विदित है गणेशजी चीफ सेक्रेटरी का काम करते हैं। भैरवजी रक्षा विभाग सम्भालते हैं, कुबेर वित्त-मन्त्री हैं और नन्दी देशाटन में पण्डित होने के कारण विदेश मन्त्री का भार सम्भालते हैं। आज कल सती के निधन से गृहमंत्री का पद रिक्त है।

कैबिनेट की बैठक शुरू होते ही भूतों का प्रदर्शन शुरू हुआ और नारे लगने लगे कि भाँग का कोटा बढ़ाया जाय, नहीं तो नशातोड़ हड़ताल शुरू होगी। भैरवजी बाहर निकले और किसी तरह इस उपद्रव को उन्होंने शान्त किया। मीटिंग शुरू हुई, कुबेर ने सूचित किया कि घोर कुप्रबन्ध के कारण आर्थिक स्थिति चौपट है, आप देशाटन में रहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं, यहाँ जम के दावतें होती हैं, इस तरह एक दिन भी काम आगे नहीं चलेगा। गणेशजी ने प्रतिवाद करना चाहा, पर उन्हें मतदान का अधिकार न होने के कारण बोलने का अवसर नहीं दिया गया। नन्दी ने निवेदन किया कि गृह विभाग पर यदि कोई नियुक्ति शीघ्र न की गई, तो विदेश में अपनी जमी हुई साख भी उखड़े बिना न रहेगी। भैरव ने इसकी पुष्टि की और बतलाया कि राशन की कटौती अब अधिक करने पर सेना में विद्रोह फैलने की आशंका है, लिहाजा गृहमन्त्री का पद रिक्त नहीं रखा जा सकता। प्रधानमन्त्री विधुर रहकर इस शासन को नहीं चला सकते। शिव बाबा ने पहले तो त्रिशूल चमकाया और सब को भाग जाने को कहा। गणेशजी ने इसको कार्यवाही में दर्ज नहीं किया, पर बाद में उन्होंने रामजी का स्मरण करके अपना निर्णय दिया कि देखो भाई, दूसरी शादी है, वह भी एक सुयोग्य पुत्र के होते हुए ढलती उम्र में! बड़ी इहलोक-हँसाई होगी; पर हाँ, यदि किसी कुमारी की बुद्धि पर सचमुच पत्थर पड़ जाय और वह स्वयं मुझे पाने के लिए तपस्या करें, तो मैं इस सम्बन्ध में पुनर्विचार के लिए प्रस्तुत हो सकता हूँ। कुबेर ने सहमति प्रकट की और मीटिंग बरखास्त हुई।

कुबेर ने नारद को मिलाकर यह साजिश की कि बहुत मनौती के बाद जड़राज हिमालय के घर में एक कन्या आयी है, किसी तरह उस कन्या से सम्बन्ध पक्का हो, तो पाँचों उँगली घी में हों। हिमालय दहेज भरपूर देगा और हिमालय की कन्या सती की तरह तेज़ तो होगी नहीं, अपना चाकचिक्य रहेगा। सो नारद दन्द-फन्द में उस्ताद ठहरे, ज्योतिषी बनकर उन्होंने अनजान बालिका पार्वती के मन में शिव जैसे बूढ़े और नीरस पति की स्वामिनी बनने में विश्व की ऐश्वर्य प्राप्ति की ऐसी आशा
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
भर दी कि वह बिचारी सचमुच अन्न जल त्याग कर शिव के लिए तप

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने लगीं। ब्रह्मा को भी अपने बौराह लड़के की शादी ठीक करने के लिए दिलचस्पी हुई। उन्होंने सप्तर्षियों को कन्या निरीक्षण के लिए भेजा, पर बूढ़े वर को सप्तर्षियों के निरीक्षण से सन्तोष नहीं हुआ और भेस बदलकर उन्होंने स्वयं कन्या परीक्षण किया। कन्या पसन्द आनी ही थी, सो पसन्द आई। विवाह पक्का हुआ और सुदिन तै हो गया। कैबिनेट की फिर मीटिंग में ड़मरु, दूसरे में लम्बा त्रिशूल देखते ही उनके हाथ से सोने की थाली छूटकर गिर पड़ी और वे गिरती पड़ती आँगन में पहुँचकर नारद के साथ पुश्त का लोकभाषा में तर्पण करने लगीं। पार्वती ने कोठे पर चट्कर वर को इशारा किया कि गोसाई, विष्णु के रुप का ध्यान कीजिए, नहीं तो गा बजाकर अकेले लौट जाना पड़ेगा, इस रूप को बाद में फिर धारण कर लीजिएगा। शिव बाबा ने देखा कि पकापकाया मामला बिगड़ना चाहता है, तो उन्होंने विष्णु के रुप का ध्यान किया और तब क्या! साँप का फण पुष्पमुकुट बन गया, जटा स्निग्ध कुन्तलराशि में बदल गई, गजचर्म हँस दुकूल बन गया और शिव की शोभा के आगे किसी की शोभा ही नहीं रही। अब जब सास परछने आई, तो जल्दी जल्दी में उन्हीं का श्रृंगार उल्टा पल्टा हो गया। आँख का काजल माथे लगा, माथे का टीका गले में आया, पैर का गहना हाथ में, हाथ का कँकन कानों में पहना गया। देखकर वर पक्ष के समधी ब्रह्मा भी अपनी सहज गम्भीरता छोड़कर मुक्त भाव से हँस पड़े। वर मण्डप में पहुँचाए जाने लगे कि इतने में गणेशजी को भूख लगी। वर ने गजवदन को कुम्हलाया देखा, तो कहा कि पहले इनकी मोदकपूजा हो जाय, तब मैं आँगन में चलूँगा। चार सेर जोखकर लड्डू आए, गणेशपूजा हुई और वर मण्डप में आए।

विधि विधानपूर्वक विवाह हुआ और वर को सखियाँ कोहबर-
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
घर में ले चलीं। आगे आगे गणेशजी भी चले, पर एक तो भारी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरीर, दूसरे पग पग पर लड्डू की भेंट! कोहबर के दरवाज़े पर आते आते उनका खड़ा रहना दूभर हो गया और धम्म से ज़मीन पर आ रहे। उधर या तो शिव बाबा विवाह ही नहीं करते थे, या कोहबर में छः महीने बीत गए, हिलने डुबने का नाम नहीं। हिमालय के सामने अब बारात को टिकाना समस्या हो गई। देवताओं के नखरे, भूत प्रतों की बड़वानल सरीखी भूख की लपट और दामाद की निश्चिंतता, हिमालय के लिए अब असह्य हो गई। यह हालत हो गयी कि बारात के सत्कार में हिमालय का घर द्वार बन्धक रखा गया और बारात के विदा होने की कोई आशा नहीं। अन्त में ब्रह्मा ने अग्नि को भेजा कि किसी तरह वर को चेताकर बाहर लाए। वर महोदय शाप देकर बाहर निकले, पर दहेज के नाम पर बेटी को देने केलिए बाप के पास बावन हंडा सुहाग भर बच रहा था और पार्वती बावन हंडा सुहाग के साथ विदा हुई।

दुलहिन ने घर में पधारते ही जो मन्त्रियों की दुर्व्यवस्था देखी, तो एक एक से मन्त्रियों की आशा के प्रतिकूल जवाब तलब करना शुरु किया और मन्त्रिमण्डल ने चुपके से इस्तीफा भेज दिया। पार्वतीजी ने संकटकालीन स्थिति की घोषणा की और राज्यपालिका बनकर शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। और पर्सनल सेक्रेटरी गङ्गा को कैलास से निष्कासित कर दिया। बुढ़ऊ ने देख सुनकर भी चुप्पी ले ली। बावन हंडा सुहाग का जोर ठहरा। खैर यह तो आगे की बात है, इस बारात ने एक इतिहास का निर्माण किया, यों कहना चाहिए कि बारात की मौजूदा प्रथा का श्रीगणेश इसी दिन से हुआ। दूसरे राज शासन में बूढ़े लोगों को दूसरी शादी करने का अधिकार मिला। तीसरे विवाह में गणेशजी की द्वारपूजा अनिवार्य अङ्ग बनी। चौथे बैल की प्रतिष्ठा हुई और पाँचवें दूसरे विवाह की पत्नी पति के लिए पति बनी। इन्हीं पाँच परम्पराओं में शिवजी की बारात अमर हो गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिल्लू

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा आधुनिक कविता की छायावादी धारा की सर्वश्रेष्ठ कवियित्री के रूप में विख्यात हैं। नारी सहज कोमलता, करुणा तथा मधुरता के कारण उनकी कविताएँ अत्यन्त प्रभावशालिनी बन गयीं। नीहार, रश्मि, सान्ध्यगीत और दीपशिखा उनकी मशहूर काव्य रचनाएँ है। 'यामा' काव्य संकलन पर उनको भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार भी मिला।

महादेवीजी उच्चकोटि की गद्य लेखिका भी हैं। अधिकांश गद्य रचनाएँ संस्मरणात्मक हैं - अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृँखला की कड़ियाँ आदि उनकी प्रसिद्ध गद्य कृतियाँ हैं। 'गिल्लू' नामक लघुचित्र उनके 'मेरा परिवार' नामक संकलन से लिया गया है। अक्टूबर 1987 को महादेवी वर्मा का निधन हुआ।

'गिल्लू' शीर्षक संस्मरण में लेखिका ने एक गिलहरी को मानवीय संवेदना के व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। इस में कथात्मकता तथा चित्रात्मकता का सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। गिल्लू के लघु जीवन का यह स्मरण चित्र अत्यन्त प्रभावपूर्ण हो उठा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सबेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ - छुऔ - वल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है - एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हम से कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु सन्देश इसके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव काँव करने को अवमानता के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की सन्धि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का एक छोटा सा बच्चा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, जो सम्भवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे, जिस में सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्धय की चोचों के दो घाव उस लघुप्राण केलिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट सा गमले से चिपका पड़ा था।

सबने कहा कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे।

परन्तु मन नहीं माना - उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लायी, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया।

रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगायी, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गयीं।

कई घण्टों के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पन्जों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर उधर देखने लगा।

तीन चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पन्जों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्भुत स्थिति में कभी कभी घण्टों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक चिक करके मानो यह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़ंकर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसन्त आया। नीम चमेली की गन्ध मेरे कमरे से हौले - हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक चिक करने न जाने क्या कहने लगीं।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज़ पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है। मेरे कालेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर यह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बना, हर डाल पर उछलता कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर झूले में झूलने लगता।

मुझे चौकाने की इच्छा उस में न आने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु - पक्षी है और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उन में से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इन में अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना मे आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उस में काजू भरे मिले, जिन से ज़ात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें नन्हें पन्जों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अन्त आ ही गया। दिन भर उस ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर मरे बिस्तर पर आया और ठण्डे पन्जों से मेरी उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठण्डे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गई है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी है - इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी - इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे सन्तोष देता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठेले पर हिमालय

धर्मवीर भारती

अध्यापन से होकर पत्रकारिता तक की यात्रा पूरी करने वाले धर्मवीर भारती निरन्तर साहित्य साधना में संलग्न रहे हैं। उनके साहित्य में विषयगत वैविध्य के साथ विध्यागत वैविध्य भी है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास रिपोर्ताज, इंटर्व्यू, रेखाचित्र, शब्दचित्र, निबन्ध और यात्रावृत्त, सब कुछ लिखा है। उनके आरंभिक लेखन में रोमान्टिसिज़्म की प्रधानता है, खासकर उनकी पहली काव्यकृतियों में किशोरावस्था की रूपासक्ति, प्रणय भावना और आकुल निराशा की अभिव्यक्ति हुई है। अंधा युग और कनुप्रिया उनकी प्रौढ़ काव्य रचनाएँ हैं, जिन में पौराणिक आख्यान और पात्रों के माध्यम से वर्तमान जीवन संघर्ष की व्याख्या की गई है। धर्मवीर भारती की आरंभिक कविताओं की तरह उनका पहला उपन्यास गुनाहों का देवता एक रोमांटिक और घोर व्यक्तिवादी उपन्यास है। संभवतः, इसी की प्रतिक्रिया में उन्होंने अपना दूसरा उपन्यास सूरज का सातवाँ घोड़ा लिखा, जिस में व्यापक स्तर पर सामाजिक सत्य का चित्रण हुआ है। इस में कथा गर्भ कथा शैली का प्रयोग किया गया है, जो हिन्दी केलिए एक नई चीज़ है। भारती जी की कहानियों में विशेषतः प्रेम और काम संबन्धों का चित्रण हुआ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके निबन्धों और एकांकियों में पर्याप्त विषय वैविध्य है। दृष्टांतों द्वारा अपने कथन की पुष्टि करना उनके निबन्धों की खास विशेषता है। धर्मयुग के संपादक के रूप में भी उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता के स्तर को ऊँचा उठाया। परन्तु उनकी सबसे महत्वपूर्ण देन, संभवतः हिन्दी रिपोर्ताज के क्षेत्र में है। एक पत्रकार के साथ साथ वे एक साहित्यकार भी है इसलिए उनके रिपोर्ताज में पत्रकार की ईमानदारी है, तो साहित्यकार की संवेदनशीलता भी है। उनके रिपोर्ताज मुख्यतः बंगलादेश के मुक्ति संघर्ष से संबन्धित है। उनकी विश्वसनीयता इसलिए भी बढ़ जाती है कि भारती जी ने उस क्षेत्र का स्वयं दौरा किया था।

ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, अंधा युग, कनुप्रिया (काव्य), गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा (उपन्यास), मुर्दों का गाँव, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान (कहानी), नदी प्यासी थी, कहनी अनकहनी, पश्यंती (एकांकी), मुक्ति क्षेत्रे युद्ध क्षेत्रे (रिपोर्ताज), प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य, सिद्ध साहित्य (आलोचना) आदि। 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक यात्रा संस्मरण में धर्मवीर भारती ने अपनी कोसानी यात्रा का बड़ा ही मर्मस्पर्शी और भावपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है। पहले तो बंजर मार्ग की शुष्कता देखकर लेखक का मन खिन्न हो उठता है, परन्तु कोसानी के बस अड्डे पर उतरते ही सामने बिखरी अतुलित सौन्दर्य राशि को देखकर वह मंत्रमुग्ध हो जाता है, फिर तो लेखक और उसके साथी कौसानी की रुपहल वादियों में खो जाते हैं। हिमालय का सौन्दर्य तो लेखक को अभिभूत करता ही है, उसके हिम - मंडित शिखर उसके हृदय में उदात्त भावों का संचार भी करते हैं। आज भी लेखक जब ठले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर लदी बर्फ को देखता है, तो उसे हिमालय की याद हो जाती है और वह वहाँ जाने के लिए आकुल हो उठता है।

ठेले पर हिमालय

'ठेले पर हिमालय' - खास दिलचस्प शीर्षक है न! और, यकीन कीजिए इसे बिलकुल ढूँढना नहीं पडा। बैठे बिठाए मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दूकान पर मैं अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिले लादे हुए बर्फवाला आया। ठंढ़ी, चिकनी, चमकती बर्फ से भाप उड़ रही थी! मेरे मित्र का जन्म स्थान अलमोड़ा है। वे क्षणभर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए खोए से ही बोले - 'यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है'। और, तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया, ठेले पर हिमालय।

सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हमलोग कोसानी गए थे। नैनीताल मे रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी! कोसी से एक सड़क अल्मोड़ा चली जाती है, दूसरी कोसानी! कितना कष्टप्रद कितना सूखा और कितना कुरुप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम निशान नहीं, सूखे भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े मेढ़े खेत जो थोड़े से हो तो शायद अच्छे भी लगे। पर उनका एकारस सिलसिला बिलकुल शैतान की आँत मालूम पड़ता है। फिर मझकाली के टेढ़े - मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़ा का एक नौसिखुवा और लापरवाह ड्राइवर, जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी मुसाफिरों के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोसानी जानेवाले सिर्फ हम दो थे, नहीं उतर गए। बस अल्मोड़ा चली गई। सामने के एक टीन के छप्पर में काठ की बेंच पर बैठकर हम वक्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी और मौसम में ऊमस भी। दो घंटे बाद दूसरी लॉरी आकर रुकी और जब उस में प्रसन्न वदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हमलोगों की जान में जान आई। शुक्ल जी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। उन्होंने ही हमें कोसानी आने का उत्साह दिलाया था और खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दीखी ही नहीं थी, उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

पर शुक्ल जी के साथ यह नई मूर्ति कौन है? लंबा दुबला शरीर, पतला साँवला चेहरा, एमिल जोला सी दाढ़ी, ढीला ढाला पतलून, कंधे पर पड़ी हुई ऊनी जर्किन, बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाइनाकुलर। और खासी अटपटी चाल थी बाबू साहब की। यह पतला - दुबला मुझ जैसा सीकिया शरीर और उस पर आपका झूमते हुए आना मेरे चेहरे पर निरंतर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्ल जी ने कहा हमारे शहर के मशहूर चित्रकार है, सेन, अकादमी से इनकी कृतियों पर पुरस्कार मिला है। उसी रूपये से घूमकर छुट्टियाँ बिता रहे हैं। थोड़ी देर में हमलोगों के साथ सेन घुल मिल गया। कितना मीठा था हृदय से वह। वैसे उसके करतब आगे चलकर देखने में आए।

कोसी से बस चली, तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल कल करतीहुई कोसी, किनारे के छोटे छोटे सुन्दर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुन्दर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे छोटे पहाड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी कभी कोसी या उस में गिरनेवाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुज़रती थी। टेढ़ी मेढ़ी ऊपर नीचे रेंगती हुई कंकड़ीली पीठवाले अजगर सी सड़क पर धीरे धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें और भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों ज्यों बस आगे बढ़ रही थी त्यों त्यों हमारे मन में एक अजीब सी निराशा छाती जा रही थी - अब तो हमलोग कोसानी के नज़दीक है, कोसी से 18 मील चले आए। कोसानी सिर्फ छः मील है; पर कहाँ गया वह अतुलित सौन्दर्य, वह जादू, जो कोसानी के बारे में सुना जाता था।

आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कोसानी से अधिक मोह है। गाँधी जी ने यहीं अनासक्तियोग लिखा था और कहा था - स्विट्ज़रलैंड का आभास कोसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुन्दर है, किन्तु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही है। हम कभी कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों ज्यों कोसानी नज़दीक आती गई त्यों त्योंअधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया; क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा चौड़ा मोड़ लिया और ढाल पर बढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उसी पर, बिलकुल शिखर पर कोसानी बसा हुआ है। कोसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरु हो जाती है। कोसानी के अड्डे पर आकर बस रुकी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमलोग बस से उतरे और मंत्र मुग्ध हो सामने का दृश्य देखने लगे। मैं सामने की दृश्यावलियों में बिलकुल खो गया। कितना अपार सौन्दर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कोसानी की पर्वतमाला ने अपने अचंल में यह जो कत्थूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और पक्ष हो तो बास करते होंगे। पचासों मील चौडी यह घाटी हरे मखाली कालीनो जैसे खेत, सुन्दर गेरु की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों सी नदियाँ। मनं में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों को लड़ियों को उठाकर कलाई में लपट लूँ, आँखों में लगा लूँ। अकस्मात् हम एक दूसरे लोक में चले गए थे। इतना सुकुमार, इतना सुन्दर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक लगा कि इस धरती पर तो जूते उतारकर पाँव पोछकर आगे बढ़ना चाहिए।

धीरे धीरे मेरी निगाहों ने उस घाटी को पार किया और जहाँ से हरे खेत, घहराती नदियाँ, घने वन क्षितिज के धूँधलेपन में, नीले कुहर में घुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया। उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं कुछ दूर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हल्का सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन सी चीज़ है, जो अटल है। यह छोटा बादल के टुकड़े सा और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रुपहला, न हल्का नीला - पर तीनों का आभास देता हुआ - यह है क्या? बर्फ तो नही है। हाँ जी। बर्फ नहीं है तो क्या है? और अकस्मात् बिजली सा यह विचार मन में कौंधा कि इस कत्यूर घाटी के पार वह नगाधिराज पर्वत सम्राट हिमालय है, इन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बादलों ने उसे ढँक रखा है, वैसे वह सामने क्या है उसका एक कोई छोटा सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों को खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख़ उठा, बर्फ! वह देखा, शुक्ल जी सेन सभी ने देखा, पर अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया। लगा उसे बाल शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया कि खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

पर उस क्षण के हिम दर्शन ने हम में जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा, थकावट - सब छूमंतर हो गई। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जाएँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा - निरावृत असीम सौन्दर्य राशि हमारे सामने अभी अभी अपना घुँघट धीरे से खिसका देगी और - और तब? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्ल जी शांत थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी कभी मुस्कुरा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे। कोसानी आई भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू।' डाक बंगले के खानसामे ने बताया कि आप लोग बड़े खुशकिस्मत है, साहब! चौदह सैलानी आकर हफ्ते भर पड़े रहे, बर्फ नहीं दीखी। आज तो आपके आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।

सामान रख दिया गया। पर मैं, मेरी पत्नी, सेन, शुक्ल जी सभी बिना चाय पिए सामने के बरामदे में बैठ रहे और एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे धीरे नीचे उतर रहे थे और एक एक नए नए शिखरों की हिम रेखाएँ अनावृत हो रही थी। और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू होकर दाईं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिम शिखरों की ऊबड़ खाबड़ रहस्यमयी रोमांचक श्रृंखला, हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं, अगर यह बता पाता तो यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक धुँधला सा संवेदन अवश्य था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठंढी ठंढ़ी भाप लगती है वैसे हो हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अतंर्द्वन्द्ध सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे नष्ट करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे, यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और, अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी पुरानी है यह हिमराशि। जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है - चिरंतन हिम। सूरज ढल रहा था और सुन्दर शिखरों पर दूर ग्लेशियर, ढाल, घाटियों आदि का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी है या नहीं या अनंत काल में इस सूने से, बर्फ ढंक दरों में सिर्फ बर्फ के अंधड हू हू करते हुए बहते रहे हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी नीली हो गई, अंधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो, जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हो अपने में डूब गए हो।

थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले - इस बार सब कुछ शांत था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग आरामकुर्सी खींचकर बैठ गया। यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो गया है? इसी हिमालय को देखकर किस किसने क्या क्या नहीं लिखा और मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, हाय एक शब्द भी तो नहीं जागता। पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिम सम्राट के समक्ष। पर धीरे धीरे लगा कि मन के अंदर भी बादल थे, जो छँट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है, जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है - कुछ ऐसा जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है, ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, वह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है, और मुझे छोटे भाई को - नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेहभरी चुनौती दे रहा है - 'हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?'

और सहसा सन्नाटा तोड़कर सेन रवीन्द्र की कोई पंक्ति गा उठा और जैसे तंद्रा टूट गई और, हम सक्रिय हो उठे - अदम्य शक्ति, उल्लास, आनन्द जैसे हम में झलक पड़ रहा था। सबसे अधिक खुश था सेन, बच्चों की तरह चंचल, चिड़ियों की तरह चहकता हुआ बोला; 'भाई साहब, हम तो आश्चर्यचकित है कि भगवान के क्या क्या कारनामे इस हिमालय में होते रहते हैं।' इस पर हमारी हँसी मुश्किल से ठंढी हो पाई थी कि अकस्मात् वह शीर्षासन करने लगा। पूछा गया तो बोला, 'मैं भले प्रकार से हिमालय देखूँगा'। बाद में मालूम हुआ कि वह बंबई की अत्याधुनिक चित्र शैली से थोड़ा नाराज़ है और कहने लगा 'वे सब प्रतिभाशाली लोग सिर के बल खड़ा होकर दुनिया को देखते है। इसी से मैं सिर के बल हिमालय देखता हूँ।'

दूसरे दिन घाटी से उतरकर, बारह मील चलकर हम बैजनाथ पहुँचे, जहाँ गोमती बहती है। गोमती की अज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिखरों पर कब पहुँचूँ, कैसे पहुँचूँ, पर उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भर के भेंटा, उस में डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले की बर्फ को देखकर वे मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गए, उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो यह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है, वे बर्फ की ऊँचाइयाँ बार बार बुलाती है और हम है कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलनेवाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसी ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने नहीं कहा था - 'कबहुँकहौ यहि रहनि रहौगो' - मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा - वास्तविक हिम शिखरों की ऊँचाइयों पर? और; तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ संदेश भेज दूँ - 'नहीं बंधु जाऊँगा। मैं फिर लौट कर वहीं जाऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मेरा मन रमता है - मैं करूँ तो क्या करूँ।'[5]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वामी दयानन्द

मोहन राकेश

मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 ई में अमृतसर में हुआ था। इनके पिता यद्यपि व्यवसाय से वकील थे किन्तु साहित्य और संगीत में उनकी गहरी अभिरुचि थी। लाहौर के ओरियन्टल कालेज से शास्त्री करने के बाद इन्होंने संस्कृत और हिन्दी में एम. ए. किया। बम्बई, शिमला, जालन्धर और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन तथा 62-63 तक सारिका का संपादन करने के बाद इन्होंने सम्पूर्ण दायित्वों से मुक्त होकर स्वतन्त्र लेखन का कार्य किया। 1972 ई में इनका देहावसान हो गया।

मोहन राकेश ने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, यात्रा विवरण, जीवनी आदि अनेक गद्य विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएँ प्रस्तुत की है। नाटक और कथा साहित्य में उनका आधुनिक भाव बोध बड़ी प्रखरता से मुखरित होता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं -

नाटक - आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे।

एकांकी - अंडे के छिलके।

उपन्यास - अंधेरे बन्द कमरे, न आने वाला कल, अन्तराल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कहानियाँ - क्वार्टर, पहचान, वारिस।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबन्ध संग्रह - परिवेश, बकलमखुद।

यात्रा विवरण - आखिरी चट्टान तक।

जीवन संकलन - समय सारथी।

प्रस्तुत जीवनी स्वामी 'दयानन्द' समय सारथी से उद्धृत की गई है। इस में अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में पुरानी गलित तथा जर्जर रूढ़ियों को ध्वस्त करके धर्म के मूल स्वरुप को स्थापित करने वाले दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला है। काठियावाड़ के टंकारा गाँव में भूमिपति अम्बा शंकर के यहाँ जन्मे मूलशंकर धर्म के आडम्बर तथा मृत्यु के क्रूर अनुभवों से गुज़रकर घर बार छोड़कर जीवन के वास्तविक लक्ष्य की खोज में निकल पड़े। साधु सन्यासियों तथा योगियों के विचारों को जाँचते - परखते उन्होंने अन्ततः मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द की शिष्यता ग्रहण की। गुरु से संस्कृत व्याकरण तथा वैदिक साहित्य का अनुशीलन करके वे जन सभाओं तथा तीर्थों में घूम घूमकर अंधविश्वासों तथा आडम्बरों के विरुद्ध संघर्षरत हो गये। उनके क्रांतिकारी आधुनिक विचारों के विरोध में उनके अनेक शत्रु भी बन गये। अन्ततः 1883 ई में जोधपुर में क्रुद्ध वेश्या के द्वारा उन्हें विष दिला दिया गया जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु के बाद उनकी विचारधारा अनेकशः गतिशील होकर आधुनिक समाज की मूल चेतना बनी। उनकी आत्म गाथा में सत्य और एकता का बीज दृष्टिगत होता है। स्वामी दयानन्द का जीवन संघर्ष आधुनिक पीढ़ी के लिए निश्चित रुप के प्रेरणा का कार्य करेगा।

स्वामी दयानन्द

काठियावाड़ का एक छोटा सा गाँव - टंकारा। इसी गाँव में एक सम्पन्न भूमिपति थे - अम्बाशंकर। वे धार्मिक व्यक्ति थे और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पौराणिक रीतियों में बहुत विश्वास रखते थे। सारे विधि विधानों का पालन बहुत नियमपूर्वक किया करते थे। उनके यहाँ एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम रखा गया मूलशंकर। पिता की कामना थी कि बालक की शिक्षा ऐसी हो जिससे बड़ा होकर वह घर की परंपरा बनाये रखे।

मूलशंकर चौदह वर्ष के थे जब पिता ने इन से शिवरात्रि का व्रत रखने केलिए कहा। रात होने पर पिता पूजा पाठ के लिए उन्हें गाँव के बाहर एक मन्दिर में ले गये। पूजा का क्रम लगभग आधी रात तक चलता रहा। उसके बाद भक्तों को नींद आने लगी। परन्तु मूलशंकर की आस्था गहरी थी, इसलिए ये नहीं सोये। एकटक शिव प्रतिमा को देखते रहे। सहसा उन्होंने देखा, एक चूहा बिल से निकलकर प्रतिमा को चढ़ाई गई भोग की सामग्री खाने लगा। मूलशंकर का मन अशांत हो उठा। उन्होंने पिता को जगाकर उनसे कई प्रश्न पूछे। कोई सन्तोष जनक उत्तर नहीं मिला। उस दिन उनके जीवन की दिशा बदल गई। उन्होंने वास्तविक शिव को खोजने का संकल्प कर लिया।

कुछ समय बाद मूलशंकर की बहन का देहान्त हो गया। बहन से इन्हें बहुत स्नेह था, इसलिए इनके हृदय को बहुत चोट पहुँची। अभी वह चोट भरी नहीं थी कि चाचा की मृत्यु हो गयी। इनका मन घर से उचाट होने लगा। मन में तरह तरह के प्रश्न जागने लगे - जीवन की वास्तविकता क्या है? सांसारिक स्नेह सम्बन्धों का क्या अर्थ है? धर्म व्यक्ति को किस प्रकार निस्तार देता है? और धर्म का वास्तविक रूप क्या है? ये हर समय खोये खोये रहते और जब तब अपने प्रश्नों से घर के लोगों को निरुत्तर कर देते। घर के लोगों ने सोचा कि शायद विवाह कर देने से इनकी मनःस्थिति में कुछ अन्तर आ जाये। मूल शंकर ने इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थिति को टालने का प्रयत्न किया। परन्तु बस नहीं चला, तो किसी को सूचित किये बिना घर से निकल पड़े।

इधर उधर घूमते हुए वे सिद्धपुर पहुँचे। सिद्धपुर में उन दिनों एक मेला चल रहा था, जिस में दूर दूर से साधु आये हुए थे। यह सोचकर कि शायद इसी मार्ग से शांति मिले, उन्होंने भी साधु का बाना स्वीकार कर लिया। रात दिन साधुओं के सत्संग में सम्मिलित होते, जीवन और मृत्यु का रहस्य जानने का प्रयत्न करते। परन्तु कुछ ही दिनों में उनके वहाँ होने की सूचना घर वालों को मिल गयी। पिता कई और सम्बन्धियों को साथ लेकर सिद्धपुर पहुँचे। उन्होंने क्रोध में आकर पुत्र का कमण्डल तोड़ डाला, उसके गेरुआ वस्त्र फाड़ दिये। घर लाकर उन्हें कड़ी निगरानी में रख दिया। परन्तु यह नियंत्रण अधिक दिन सफल नहीं रहा। मूलशंकर किसी तरह फिर घर से निकल गये। इस बार उन्होंने निश्चय कर लिया कि कुछ भी हो, अब वे लौटकर घर नहीं आयेंगे।

अब उन्हें खोज थी एक गुरु की। चामोद कर्णाली पहूँचकर वे स्वामी पूर्णानन्द से मिले। उनसे सन्यास लेकर इन्होंने नया नाम अपना लिया - दयानन्द। उसके बाद भ्रमण करते हुए हरिद्वार चले गये। वहाँ कुम्भमेला चल रहा था। मेले में उन्होंने धर्म के नाम पर जो कुछ होते देखा, उससे उन्हें बहुत ग्लानि हुई। मन में संकल्प जागा - इन कुरीतियों को दूर करने केलिए उन्हें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु इसके लिए भी किसी का मार्ग प्रदर्शन चाहिए। उन्होंने सुन रखा था कि गढ़वाल में अलखनंदा के पार बहुत से योगी रहते हैं। वे वहाँ पहुँचे, पर कोई ऐसा योगी नहीं मिला जो सचमुच उन्हें दिशा दिखा सकता। वहाँ से वे गढ़मुक्तेश्वर गये। वहाँ एक दिन इन्होंने नदी में बहते एक शव को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकाल लिया। उसकी चीर फाड़ करके देखना चाहा कि योगियों द्वारा बताये गये चक्र तथा कुंडलिनियाँ आदि उस में हैं या नहीं? परन्तु शव के अंदर जो कुछ मिला, वह सर्वथा भिन्न था।

वे कानपुर गये। प्रयाग गये। काशी गये। पर कहीं भी उन्हें अपने मन के अनुकूल गुरु नहीं मिला। फिर पता चला कि मधुरा में दंडी स्वामी बिरजानन्द नाम के नेत्रहीन ब्राह्मण रहते हैं जो सचमुच उनका पथ प्रदर्शन कर सकते है। वे मथुरा चले गये। स्वामी बिरजानन्द से मिलकर उन्हें लगा कि सचमुच यहीं गुरु हैं, जिसकी उन्हें खोज थी। स्वामी बिरजानन्द संस्कृत व्याकरण के पंडित थे। वेदों की उन्होंने मौलिक व्याख्या की थी। वे बहुदेवोपासना, मूर्ति पूजा आदि को वेदों के विरुद्ध बतलाते थे। वे स्वयं एक ऐसे शिष्य की खोज में थे जो उनके विचार जन साधारण तक पहुँचा सके। दयानन्द ने उनके प्रश्नों के जो उत्तर दिये, उनसे प्रसन्न होकर उन्होंने तुरन्त उसे अपना शिष्य बनाना स्वीकार कर लिया।

यहाँ इनका संस्कृत व्याकरण तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन आरम्भ हुआ। स्वामी बिरजानन्द जो एक बार पढ़ा देते, वह दूसरी बार नहीं पढ़ाते थे। दयानन्द की प्रतिभा इतनी विलक्षण थी कि इन्हें दोबारा पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। कहते हैं कि एक बार का पाठ इतना कठिन था कि ये उस में से कुछ अंश भूल गये। गुरु से यह बात कहीं, तो वे उस पाठ को दोहराने को तैयार न हुए। ये निराश होकर यमुना के किनारे एक पेड़ के नीचे जा बैठे। एकाग्रचित होकर सोचने से थोड़ी देर में पाठ स्मरण हो आया। जाकर जब गुरु को वह पाठ उन्होंने सुना दिया तो गुरु की प्रसन्नता की सीमा न रही। इसके लिए आवश्यक था कि उनकी वाणी हर व्यक्ति तक पहुँच सके। पहले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे संस्कृत में भाषण दिया करते थे। परन्तु अपनी बात जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उन्हीं की भाषा में बात कहने का निश्चय किया। वे अपने भाषण हिन्दी में देने लगे।

एक बार स्वामी दयानन्द कर्णवास पहुँचे। उन दिनों वहाँ गंगा स्नान का मेला था। हज़ारों लोग देश के विभिन्न भागों से वहाँ स्नान केलिए आए हुए थे। उन में बरेली के राय कर्ण सिंह भी थे। स्वामी दयानन्द ने वहाँ भाषण दिया। जैसे ही भाषण समाप्त हुआ, राय कर्ण सिंह उनसे वाद विवाद करने लगे। स्वामी दयानन्द ने कर्णसिंह से कुछ प्रश्न पूछे जिनका वह उत्तर नहीं दे पाये। अपनी असमर्थता पर उन्हें इतनी खीझ हुई कि वे इन पर गालियों की बौछार करने लगे। क्रोध में उनका हाथ बार बार तलवार की मूठ पर जा रहा था। यह देख दयानन्द बोले, 'यदि शास्त्रार्थ करना है, तो अपने गुरु को यहाँ बुला लाओ। यदि युद्ध करने का शौक है तो एक सन्यासी से क्यों टकराते हो, जयपुर और जोधपुर से जा भिड़ो।' यह सुनकर कर्णसिंह इन पर तलवार से वार करने दौड़े। वे वार करने ही जा रहे थे कि इन्होंने तलवार छीन कर उसके दो टुकड़े कर दिये और कहा, 'मैं सन्यासी हूँ। तुम पर वार करके बदला नहीं लूँगा। जाओ भगवान तुम्हें सुबुद्धि दे।'

यूँ तो स्वामी दयानन्द का कार्य क्षेत्र सारा उत्तर भारत था, फिर भी इन्हें अधिक सफलता पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में मिली। लगभग अठारह वर्ष वे विभिन्न प्रदेशों में घूमकर अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। एक तरह से कहा जा सकता है कि उन्होंने प्राचीन और नवीन के बीच एक कड़ी का काम किया। 10 अप्रैल, 1875 को बम्बई में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। दो वर्ष बाद लाहोर में आर्य समाज की स्थापना की गयी। शीघ्र ही इसने एक व्यापक संगठन का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूप ले लिया और उत्तर भारत के प्रायः सभी नगरों और कस्बों में आर्य समाज के अपने मंदिर स्थापित हो गये। इनके शिष्यों की संख्या इतनी बढ़ गयी कि उन्होंने यह वैचारिक क्रांति शिक्षा के क्षेत्र में ले जाने का निर्णय कर लिया। शिक्षा के अतिरिक्त राजनीति को भी एक नयी दिशा देने का संकल्प कर लिया गया। इसी उद्देश्य से स्वामी श्रद्धानन्द ने 'गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

सन् 1883। महाराजा जोधपुर ने स्वामी दयानन्द को अपने यहाँ निमन्त्रित किया था। वहाँ कई दिनों तक वे महाराजा के अतिथि के रूप में नियमित रूप से जनता को उपदेश देते रहे। वहाँ रहते इन्हें पता चला कि महाराजा एक वेश्या से प्रेम करते हैं। इन्होंने इस बात की भर्त्सना की, तो वह वेश्या इनकी शत्रु बन गयी। रसोइये से मिलकर उसने इन्हें भोजन में विष खिला दिया। विष के प्रभाव से इनके सारे शरीर पर फफोले निकल आये। चिकित्सा का अच्छे से अच्छा प्रबन्ध किया गया, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। सन् 1883 की दीवाली का दिन था। स्वामी दयानन्द गायत्री मंत्र का उच्चारण करते करते एकाएक मौन हो गये।

कुछ ही व्यक्ति होते हैं जिनकी मृत्यु उनके जीवन से अधिक क्रांतिकारी सिद्ध होती है। स्वामी दयानन्द ऐसे ही व्यक्तियों में से थे। उनकी मृत्यु के कुछ ही वर्षों के अन्दर आर्य समाज ने एक अत्यन्त सबल आंदोलन का रूप ले लिया। शिक्षा के क्षेत्र में तो इनके अनुयायियों ने सचमुच एक क्रांति ला दी। स्वामी दयानन्द को एक तरह से उत्तर भारत में आधुनिक विचारधारा का प्रवर्तक कहा जा सकता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में उन्होंने जो स्थापनाएँ सामने रखीं, उन्हीं के आधार पर समाज का मानसिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुनर्गठन सम्भव हो सका। जब कोंग्रस का जन्म भी नहीं हुआ था, तभी उन्होंने कहा था कि स्वराज्य के बिना कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। भाषा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि अंग्रेज़ी हमारे संस्कारों की भाषा नहीं है, संस्कृत जनसाधारण से दूर जा पड़ती है, इसलिए हिन्दी ही संपूर्ण राष्ट्र की भाषा हो सकती है। गाँधीजी के हरिजन आंदोलन से बहुत पहले उन्होंने कहा था कि अस्पृश्यता हमारे समाज के लिए घातक है। वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते हुए भी उसका आधार जन्म को नहीं, कर्म को माना था। कहा था, 'जन्म से सब बराबर हैं। अपने कर्म से ही व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र बनता है।' इसी तरह स्त्री शिक्षा का सूत्रपात तथा विधवा विवाह का समर्थन करके उन्होंने एक पिछड़े समाज को अग्रगामी बनाने में बहुत बड़ा योग दिया। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ने इन शब्दों में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की थी, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में सत्य और एकता का बीज देखा, जिसकी प्रतिमा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया, जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत् और पवित्रता के लोक में लाना था, उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्र व्यवहार

पत्र व्यक्ति के बीच, व्यापारिक संस्थाओं के बीच और सरकारी कार्यालयों के बीच संपर्क स्थापित करने का एक साधन है। इसलिए ही वर्तमान दुनिया में इसका बडा महत्वपूर्ण स्थान है। वाणिज्यिक या व्यावसायिक संस्थाओं के बीच एवं सरकारी कार्यालयों के बीच पत्राचार होता है, जिसके द्वारा उनके कार्य चलते हैं। व्यापार में वृद्धि एवं सरकारी कार्यों में प्रगति पत्रों के द्वारा संभव है। पत्रलेखन एक कला है। इसका संबन्ध उपयोगी कला और ललित कला दोनों से है। यह मनुष्य की जीवन चर्या से जुडा हुआ है इसकारण उपयोगी कला है और इसमें मानव-मन की रागात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होने पर यह ललित कला भी है। स्पष्टता, संक्षिप्तता, शिष्टता एवं मौलिकता पत्रों के अनिवार्य गुण हैं। पत्र में जो कुछ लिखा जाता है वह हमेशा केलिए लिखित प्रमाण है। इसलिए पत्र लेखन में पत्र की पूर्णता, रोचकता और प्रभावात्मकता भी महत्वपूर्ण हैं।

पत्रों के अंग

विषय संदर्भ, पत्र लिखनेवाले और पत्र पानेवाले व्यक्ति आदि के अनुसार पत्र अनेक प्रकार के होते हैं। पत्रों के अंग निम्नलिखित हैं -

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. प्रेषक/from (पत्र लिखनेवाले/Despatcher के नाम व पता)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. सेवा में/To (प्रेषिती/Addressee या पत्र पानेवाले का नाम व पता)
3. दिनांक/Date (पत्र तैयार करने की तारीख)
4. संबोधन/Salulation (प्रेषिती से संबन्ध के अनुसार किसी संबोधनात्मक शब्द का प्रयोग)
5. अभिवादन/Greetings (प्रेषिती से संबन्ध के अनुसार किसी अभिवादन सूचक शब्द का प्रयोग)
6. विषय/subject (यह पत्र देखते ही उसमें लिखित सामग्री का पता चलने केलिए लिखनेवाला शीर्षक है) सरकारी तथा व्यावसायिक पत्रों में विषय-शीर्षक लिखा जाता है।
7. संदर्भ/Reference (सरकारी और व्यावसायिक पत्रों में लिखित सामग्री पर पूर्व पत्राचार हो चुका हो तो उसका संदर्भ - संकेत दिया जाता है।)
8. कलेवर/Body of the letter (यह पत्र की मुख्य सामग्री है। इस अंग में वे बातें लिखी जाती है, जिन्हें पत्र पानेवाले को सूचित करना अभीष्ट होता है।)
9. स्वनिर्देश/closure (पत्र की समाप्ति होने पर हस्ताक्षर करने के पूर्व प्रेषिती के अपना संबन्ध तथा विषय की औपचारिकता और अनौपचारिकता के अनुसार प्रेषक द्वारा प्रयोग किया जानेवाला समापन सूचक शब्द।)
10. हस्ताक्षर/signature (प्रेषक का हस्ताक्षर)
11. संलग्न पत्र/संलग्नक/Enclosure (मूल पत्र के साथ भेज जानेवाले अन्य आवश्यक पत्र भी होते हैं। इन अन्य आवश्यक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्रों का विवरण हस्ताक्षर के बाद बायीं ओर संलग्नक या संलग्न पत्र शीर्षक देकर संकेत रुप में लिखा जाता है)

12, पृष्ठांकन/Endorsement (पत्र की प्रतिलिपियाँ किन किन संबन्धित अधिकारियों को भेजा जाता है उनका विवरण संलग्न पत्र के नीचे पृष्ठांकन शीर्षक देकर लिखा जाता है।)

उपयुक्त सभी अंगों का प्रयोग सभी पत्रों में नहीं होता है।

पत्रों के प्रकार

पत्रों के मुख्य रुप से तीन वर्ग हो सकते हैं -

1. निजी या वैयक्तिक पत्र (Personal letters)
2. वाणिज्य अथवा व्यावसायिक पत्र (Commercial or business letters)
3. प्रशासनिक अथवा सरकारी पत्र (Administrative or Official letters)

1. निजी या वैयक्तिक पत्र

वैयाक्तिक पत्र बिलकुल व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक होता है। यह व्यक्ति-व्यक्ति के बीच लिखा जाता है। पारिवारिक सदस्यों, मित्रों या परिचितों के बीच लिखे जानेवाले पत्र इस कोटि में आते हैं। इनमें आत्मीयता भाव रहता है। ये अनौपचारिक और भावात्मक होते हैं। इनमें पत्र लिखनेवाला अपने मन की बात उन्मुक्त भाव से लिखता है और प्रायः वह अपनी सहज बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है। व्यावसायिक या सरकारी पत्रों की तुलना में इनका कोई कानूनी बंधन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नहीं होता है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. वाणिज्य अथवा व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्र वे हैं जो व्यापारियों के बीच किसी व्यावसायिक कार्य केलिए लिखे जाते हैं। व्यापारी इनके बल पर लाखों का लेन-देन और व्यापार करते हैं। व्यापार की सफलता-विफलता एक सीमा तक पत्र-व्यवहार पर ही निर्भर रहती है।

3. प्रशासनिक अथवा सरकारी पत्र

यह राज्य सरकार या केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के बीच होता है। शासकीय कर्मचारियों अथवा अधिकारियों द्वारा एक कार्यालय या विभाग को लिखे जानेवाले पत्र इस कोटि में आते हैं। इन पत्रों के ढाँचे में कुछ समानताएँ होने पर ये अलग अलग उद्देश्य से लिखे जाते हैं। इसलिए पत्रों के अंग विषय आदि में विभिन्नताएँ भी दिखाई पडती है।

पत्रों के आलेखन के आधार पर इसके दो प्रकार होते हैं।

1. प्रारंभिक आलेखन (Elementary drafting)
2. उन्नत आलेखन (Advanced drafting)

प्रारंभिक आलेखन में ऐसे पत्र लिखे जाते हैं, जिनका व्यक्ति के निजी जीवन से अधिक संबन्ध है। उन्नत आलेखन में सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होनेवाले विविध प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं।

प्रारंभिक आलेखन के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के पत्र आते हैं।

1. वैयक्तिक पत्र (Personal letters)
2. आवेदन पत्र (Applicatio letters)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

3. पदाधिकारियों को पत्र (Letters to officials)
4. व्यावसायिक अथवा व्यापारिक पत्र (Business letters)
5. संपादक के नाम पत्र (Letter to the editor)
6. निमन्त्रण पत्र (Invitation letter)

1. वैयक्तिक पत्र

वैयक्तिक पत्र बिलकुल व्यक्तिगत और अनौपचारिक है। इसमें प्रेषक (पत्र लिखनेवाला) और प्रेषिती (पत्र पानेवाला) के पारस्परिक संबन्ध के अनुसार संबोधन अभिवादन और स्वनिर्देशसूचक शब्दों का प्रयोग होता है।

जैसे

प्रेषक के प्रेषिती का संबन्ध	संबोधन	अभिवादन	स्वनिर्देश
पिता, माता या समकक्ष संबन्धी	पूज्य आदरणीय	सादर प्रणाम नमस्कार	आपका प्रिय (प्रेषक का नाम)
बडा भाई, बडी बहन	आदरणीय	सादर नमस्ते	आपका स्नेह भाजन
छोटा भाई या बहन	प्रिय (प्रेषितीका नाम)	सप्रेम नमस्ते	तुम्हारा स्नेही
पुत्र, पुत्री	प्रिय	प्रसन्न रहो या शुभ आर्शीवाद	तुम्हारा स्नेही

वैयक्तिक पत्र का नमूना

1. पुत्री का पत्र माता जी को छात्रावास

कस्तूबा कॉलेज, महाराष्ट्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूज्य माताजी

नमस्कार।

आपका पत्र पाकर मुझे बडी खुशी हुई। आपकी प्रार्थना से मैं यहाँ स्वस्थ और प्रसन्न रहती हूँ। हमारे होस्टल में कुल मिलकर पच्चास छात्राएँ हैं। अधिकांश छात्राएँ महाराष्ट्रा के बाहर से यहाँ पढने केलिए आयी हैं। पहले मुझे ऐसा डर था कि होस्टल में जीना बडा मुश्किल होगा। लेकिन थोडे ही दिन में सबसे मिलने का और परिचय पाने का मौका मिला। भाषा का झंझड भी गायब हुआ। मुझे यहाँ कोई मुसीबत नहीं है। आशा है कि आप पिताजी और बडे भय्या के साथ स्वस्थ और सुखी हैं। पिताजी को मेरा प्रणाम कहिए और बडे भय्या को मेरा प्यार।

आपकी बेटी

(हस्ताक्षर)

2. भाई का छोटी बहिन को पत्र

15 भवानी मार्ग

नई दिल्ली

दिनांक 5 जूलाई 2017

प्रिय बहिन लीना,

सप्रेम नमस्ते

बहुत समय से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया, क्या बात है? तुम सब वहाँ कुशलपूर्वक तो हो न?

यहाँ दस सित्तंबर को तुम्हारे भाई अर्जुन का तिलक तय चुका है। उस अवसर पर तुम्हारी उपस्थिति यहाँ सब चाहते हैं। इतना ही नहीं तुम्हें यहाँ से गए काफी दिन हो गए हैं। पिताजी हमेशा तुम्हारी बात कह रहे हैं। इस बार जलदी ही आने की तिथि-तय करके पत्र लिखना। मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहाँ आकर तुम्हें ले आऊँगा। पत्रोत्तर जलदी देना। बच्चों को मेरी ओर से प्यार कहना। माताजी तुम्हें आशीरवाद दे रही है।

तुम्हारा स्नेही भाई
अरविन्द

2. आवेदन पत्र

जब किसी संस्था में लिपिक एजेन्ट, अध्यापक, लेखाकार जैसे पदों की ज़रूरत होती है तब वे योग्य व्यक्तियों को चुनने केलिए विज्ञापन निकालने हैं। इसके आधार पर योग्य व्यक्ति अपनी योग्यता का परिचय देकर और नियुक्ति की अभिलाषा प्रकट कर पत्र भेजते हैं। इन्हें आवेदन पत्र कहते हैं।

आवेदन पत्र का ढाँचा वैयक्तिक पत्र से कुछ भिन्न होता है। इनमें पत्र-प्रेषक का पता पत्र की समाप्ति पर नीचे बायी ओर लिखा जाता है। पत्र के प्रारंभ में बायीं ओर सेवा में लिखा जाता है और अगली पंक्ति में प्रेषिती (पत्र पानेवाले) का पद और पता लिखा जाता है। संबोधन केलिए महोदय शब्द का प्रयोग होता है। आवेदन पत्र में अभिवादन नहीं होता है। सीधे ही निवेदन है, या सविनय निवेदन है जैसे वाक्यांश से पत्र का कलेवर शुरु होता है। स्वनिर्देश और हस्ताक्षर के स्थान नीचे दायी ओर हैं। स्वनिर्देश कोलिए भवदीय शब्द का प्रयोग होता है। दिनांक पत्र के नीचे बायीं ओर लिखा जाता है। आवेदन पत्र की रूपरेखा इस प्रकार है -

सेवा में (प्रेषिती का पता)

........................।

महोदय,

निवेदन है कि .... (कलेवर ....।

भवदीय

(हस्ताक्षर)

(दिनांक)

प्रेषक का पता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अ. छुट्टी केलिए आवेदन पत्र

नमूना

सेवा में

प्राध्यापक

हिन्दी विभाग

मिनर्वा कॉलेज

तिरुवनन्तपुरम

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे कल रात को ज्वर हो गया है। मैं तीन दिन तक दर्जे में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। कृपया तीन दिन (15, 16 और 17 जूलाई 2016) की छुट्टी देने की कृपा करें।

भवदीय

15.07.2016 (ह)

'नन्दनम' जितिन

स्टेशन रोड

तिरुवनन्तपुरम

आ. नौकरी पाने केलिए आवेदन

सेवा में

प्रिनसिपल महोदय

अमृता कॉलज

कोच्ची।

विषय : प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति हेतु आवेदन

संदर्भ : तारीख 10 जून 2016 के मनोरमा समाचार पत्र में आपका विज्ञापन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

महोदय,

10 जून 2016 के मनोरमा समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन से, मुझे यह ज्ञात हुआ कि आपके कॉलज में एक हिन्दी प्रध्यापक की आवश्यकता है। इस पद केलिए मैं अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत करता हूँ।

मेरी योग्यताएँ एवं अनुभव निम्नलिखित हैं

1. शैक्षणिक योग्यताएँ
   एम.ए. (हिन्दी) प्रथम श्रेणी, केरल विश्व विद्यालय
   पी.एच.डी. (हिन्दी) केरल विश्व विद्यालय नेट (यु.जी.सी) वर्ष 2010
2. अनुभवः- दो सालों से एक सरकारी कॉलेज में अतिथि प्राद्यापक
3. आयू - छब्बीस वर्ष
4. मातृभाषा - मलयालम

अध्यापन अनुभव के अतिरिक्त मुझे लेखन कार्य में भी रुचि है। मेरी दो कविता संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। मेरी आशा है कि आप मेरे आवेदन पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मुझे अपने कॉलेज में नियुक्ति देकर कृतार्थ करेंगे।

अनुकूल कार्यवाही की प्रतीक्षा में

भवदीय
शरत कुमार
शरत कुमार

कोल्लम
12-6-2016
'सितारा'
बीच रोड
कोल्लम

एजेन्सी केलिए आवेदन पत्र

सेवा में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

व्यवस्थापक

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धात्री तेल प्राइवेट् लिमिटड

एरणाकुलम

महोदय

मुझे ज्ञात हुआ कि आप अपनी संस्था धात्री तेल प्राइवेट लिमिटड का एजेन्ट नियुक्त करना चाहते हैं। उस पद केलिए आपकी सेवा में यह आवेदन भेज रहा हूँ।

मैंने केरल विश्वविद्यालय की बी.कॉम परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। कम्प्यूटर की जानकारी हासिल कर मैंने दो साल तक एक स्थानीय कम्पनी में एजेडं का काम किया था।

व्यापार के संबन्ध में इस तरह मुझे प्रत्यक्ष अनुभव भी प्राप्त हुआ है। मेरे आचरण, अनुभव एवं योग्यता संबन्धी प्रमाण पत्र इसके साथ प्रोषित है। मेरी उम्र पच्चीस साल की है और स्वास्थ्य भी अच्छा है।

आपसे निवेदन है कि आप मुझे अपनी संस्था का एजेन्ट नियुक्त करें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे प्रयत्न से आपका व्यापार खूब बढेगा और धात्री तेल खूब लोकप्रिय हो जायेगा। अनुकूल जवाब की प्रतीक्षा में,

भवदीय,

कोल्लम (हस्ताक्षर)

5-11-2015 एस.मोहन

के.सी. 4/550

केशवन नगर

आश्रामं

कोल्लम

3. पदाधिकारी को पत्र (Letters to officials)

किसी पदाधिकारी को लिखे जानेवाले पत्र इस कोटि में आते हैं। उसका स्वरूप आवेदन पत्र के समान होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इ. स्टेशन मास्टर के नाम पत्र

प्रेषक

प्रिनसिपल

नेहरु कॉलेजस, पालोड

सेवा में

स्टेशन मास्टर

के.एस.आर.टी.सी.

तिरुवनन्तपुरम

महोदय

निवेदन है कि आपके डिप्पो से हमारे कॉलेज में आनेवाली मोटोर गाडी ठीक समय पर नहीं आती है। इस कारण छात्र-छात्राओं को कष्ट झेलना पडता है। वे ठीक समय पर क्लास में नहीं आते हैं। कृपया इस मामले में गंभीरतापूर्वक विचार करें। आशा है कि आप हमारी समस्या समझ सकेंगे और उचित कार्यवाही करेंगे।

भवदीय

(ह.)

तिरुवनन्तपुरम

14 जून 2016

ई. बैंक में खाता खोलने केलिए पत्र

बैंक में खाता खोलना, उधार लेना, धनादेश भेजना जैसे कार्य जीवन के अभिन्न अंग हो गये हैं आजकल बैंक में खाता खोलने केलिए मुद्रित प्रपत्र होते हैं।

बचत खाता खोलने केलिए पत्र

सेवा में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रबन्धक

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूणियन बैंक
पेट्टा, तिरुवनन्तपुरम

प्रिय महोदय,

विषय : बचत खाता खोलने के विषय में

प्रार्थना है कि कृपया आपके बैंक में एक बचत खाता निम्नलिखित नाम से प्रारंभ करें।

नाम - मुकेश.एस

मैं बैंक की बचत बैंक खाते की नियमावली का पूरा पालन करने को सहमत हूँ। खाते में न्यूनतम शेष राशि 500 रुपये होगी। आपके बैंक के खातेदार और जमाकर्ता श्री अनिलकुमार से खाता संख्या 1028 का परिचय-पत्र भी संलग्न है।

कृपया मुझे चेक बुक भी प्रदान कीजिए

भवदीय
(ह)
आकाश

पता

आकाश
अप्सरा भवन
टी.सी. 10/2505
कवडियार
तिरुवनन्तपुरम

4. व्यापारिक अथवा व्यावसायिक पत्र

एक व्यापारी के द्वारा दूसरे व्यापारी को व्यापारिक लेन-देन के संबन्ध में लिखे गये पत्र व्यापारिक अथवा व्यावसायिक पत्र कहलाते हैं। व्यापारिक पत्रों की सहायता से ही व्यापारी बिक्री के नये साधन खोजता है, नये ग्राहक उत्पन्न करता है और व्यापार संबन्धी अन्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रियाओं की पूर्ति करता है। व्यापारिक पत्र आज के व्यापार का आवश्यक अंग बन गये हैं।

एक अच्छे व्यापारिक पत्र में निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

1. स्पष्टता - व्यापारिक पत्र सरल और स्पष्ट भाषा में लिखा जाना चाहिए। उसमें कठिन शब्द या साहित्यिक भाषा का प्रयोग मत करना चाहिए। उसके द्वारा जो कुछ कहना हो वह व्यक्त और स्पष्ट होना चाहिए।
2. सरलता और स्वाभाविकता - व्यापारिक पत्र में सरलता और स्वाभाविकता अनिवार्य है। ऐसा होने पर पत्र में स्पष्टता भी आ जायेगी। काव्यभाषा या अप्रचलित शब्दों का प्रयोग उसमें नहीं होना चाहिए।
3. यथार्थता - पत्र में जो कुछ लिखा जाये, वह सत्य होना चाहिए। आँकडों को तोडना-मरोडना या गलत ढंग से प्रस्तुत करना व्यापार में हानिकारक होता है।
4. संक्षिप्तता - व्यापारिक पत्र सीमित और संक्षिप्त होना चाहिए, क्योंकि व्यापार में समय ही धन है। व्यर्थ के लंबे पत्र लिखने तथा पढने से समय बरबाद होता है।
5. सम्पूर्णता - पत्र का अपने आप में पूर्ण होना अनिवार्य है। विषय की सभी आवश्यक बातों का समावेश उसमें होना चाहिए। अपूर्ण पत्र लिखने से समय और धन का नष्ट होता है।
6. शिष्टता - व्यापारिक पत्र शिष्ट होना चाहिए। उसमें प्रेषक को व्यक्तिगत द्वेष शिकायत, नाराज़गी आदि से बचना चाहिए। नम्रता अप्रसन्न और असन्तुष्ट व्यक्ति को भी शान्त कर देती है। इतना ही नहीं शिष्ट पत्र व्यापारी की प्रसिद्धि में भी सहायक होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. प्रभावशीलता - व्यापारिक पत्र का प्रभावशाली होना बिलकुल अनिवार्य है। पत्र इतना रोचक, आकर्षक और विश्वास विजयी होना चाहिए कि पानेवाले को प्रेषक के निवेदन के अनुसार कार्य करने केलिए उत्साहित करें। इसलिए व्यापारिक पत्र का प्रभावशाली होना सबसे बडा गुण है।

व्यापारिक क्षेत्र, के भीतर आनेवाले प्रमुख पत्र

1. माल का भाव पूछने केलिए पत्र
2. मूल्य सूची माँगने केलिए पत्र
3. माल का नमूना माँगने केलिए पत्र
4. माल की खराबी का शिकायती पत्र
5. माल माँगने का आदेश पत्र
6. परामर्श पत्र
7. भुगतान संबन्धी पत्र
8. बीमा पत्र
9. बैंक पत्र
10. परिपत्र

व्यापारिक पत्र का ढाँचा वैयक्तिक पत्रों के ढाँचे से भिन्न है। व्यावसायिक पत्रों में प्रेषक का पता ऊपर अथवा दायी ओर लिखा जाता है। तार का पता या फोन न० भी इसी के साथ साथ दिया जाता है। दायीं ओर प्रेषक के पते के नीचे दिनांक लिखा जाता है। इसके नीचे कुछ जगह छोडकर प्रेषिती का नाम और पता लिखा जाता है। संबोधन प्रिय महोदय के रूप में होता है और अभिवादन नहीं होता है। स्वनिर्देश और हस्ताक्षर अन्य पत्रों के समान दायीं ओर पत्र के नीचे होते हैं। आपका विश्वासभाजन, भवदीय जैसे स्वनिर्देश का प्रयोग किया जाता है। हस्ताक्षर कर्ता का नाम हस्ताक्षर के नीचे लिख देना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहिए। यदि हस्ताक्षर कर्ता दूसरे सज्जन के दायित्व पर लिख रहा है, तो उसे निमित्त, वास्ते, केलिए या कृते शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

व्यापारिक पत्रों के कुछ नमूने

1. मूल्य सूची भेजने केलिए पत्र

चाँदनी एण्ड सन्स

24 दरियागंज़
नई दिल्ली
जनवरी 15, 2016

पत्र संख्या : 425/55

सेवा में

सर्वश्री महेन्द्रलाल
शिवाजी मार्ग, मुंबाई
विषय - मूल्य सूची भेजने केलिए
परामर्श - 2015 दिसंबर 10 का विज्ञापन

प्रिय महोदय

आपका विज्ञापन नवभारत टाइम्स एवं हिन्दु में देखा। उसके अनुसार यह पत्र आपकी सेवा में भेजा जा रहा है आप अपने सभी प्रकार के कपडों के नमूने, मूल्य सूची और न्यूनतम भाव जलदी भेजने की कृपा करें।

अगर आपका मूल्य हमें उपयुक्त है तो हम जल्दी क्रयादेश भेज देंगे। पत्र में भुगतान संबन्धी शर्तों को भी व्यक्त करने की कृपा करें।

भवदीय
(हस्ताक्षर)
आलोकनाथ
व्यवस्थापक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. पुस्तकें माँगने केलिए क्रयादेश पत्र

लोकमंगल प्रकाशन

(पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता)

12 महात्मा गाँधी रोड

क्रमांक 327/15-16 शाहदरा, दिल्ली

दि. 30 जून 2015

सेवा में

सर्वश्री राजकमल प्रकाशन

नेताजी सुभाष मार्ग

रामटेक

महाराष्ट्र

प्रिय महोदय

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें सवारी गाडी से 15 जूलाई तक भेज दीजिएगा और रेलवे रसीद स्टेट बैंक आफ इंडिया शाहदरा शाखा द्वारा भिजवा दीजिएगा -

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी - 100 प्रतियाँ
2. हिन्दु सभ्यता - राधाकृष्ण मुखर्जी - 50 प्रतियाँ
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डा. रामकुमार वर्मा - 50 प्रतियाँ
4. व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेज़ी कोश - भोलानाथ तिवारी - 100 प्रतियाँ

आपसे अनुरोध है कि इन्हीं पुस्तकें जलदी भेज दें ताकि हम अपने ग्राहकों को यथासमय दे सकें। अग्रिम भुगतान के रूप में 1000 रुपये का धनादेश हम भेज रहे हैं। बाकी रकम आपसे बिल प्राप्त होने पर जलदी भेज देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भवदीय
(हस्ताक्षर)
अनिलकुमार
व्यवस्थापक

3. उधार पर माल देने में ग्राहक की आर्थिक स्थिति के बारे में जान लेने की इच्छा से लिखा गयां पत्र

मनोहरलाल इन्डस्ट्रीय
(जूतों की मैनुफाक्चरिंग कंपनी, पूने)

तारीख 15-3-2015

सेवा में
सर्वश्री लक्ष्मीकान्त एण्ड कंपनी
मैसूर

मान्यवर,

सर्वश्री विनया फुट् वेयर केरल वालों ने हमसे पच्चीस हज़ार रुपये का माल उधार माँगा है। उन्होंने वादा किया है कि चार महीने के अन्दर माल का मूल्य भर देंगे। उस संस्था से अब तक हमारा कोई संपर्क नहीं रहा। उनके बारे में हम कुछ जानते भी नहीं। उन्होंने लिखा है कि आपसे उनका व्यापारिक संबन्ध वर्षो से चालू है। हम इस नई कंपनी के साथ व्यापारिक संबन्ध स्थापित करना चाहते हैं। इसलिए उनकी आर्थिक स्थिति और व्यापारिक संबन्ध के बारे में लिखकर हमें भेज दें।

हम वादा करते हैं कि पूरी जानकारी अत्यन्त गोपनीय रहेगी।

सधन्यवाद,
भवदीय
(हस्ताक्षर)
व्यवस्थापक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. निर्दिष्ट पुस्तकों के बदले अन्य पुस्तकें भेजी जाने पर एक शिकायती पत्र।

महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय
सहकारी संघ
कोट्टयम
5-1-2016

क्रमांक 5042/16

सेवा में
राधाकृष्ण प्रकाशन
अंसारी मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली

प्रिय महोदय

हमने तारीख 10-12-2015 को आपके नाम कुछ पुस्तकें माँगते हुए पत्र लिखा था। इनमें रामविलास शर्मा का भाषा और समाज की पच्चास प्रतियाँ थीं। आज हमें पार्सल मिला। खोलने पर मालुम हुआ कि भाषा और समाज के बदले डा.राधाकृष्ण शर्मा की भाषा और भारत की पच्चास प्रतियाँ भेजी हैं। पर्सल विभाग के किसी कर्मचारी की असावधानी से यह भूल हुई होगी। हमें भाषा और भारत की ज़रूरत नहीं है। इसलिए हम आपको वापस भेज रहे हैं। आप बिना विलंब भाषा और समाज की पच्चास प्रतियाँ भेज देने की कृपा करें। दुबारा पुस्तकें भेजने में जो डाक खर्च अधिक होगा, वह आपको ही देना पडेगा

भवदीय
(हस्ताक्षर)
व्यवस्थापक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. अपनी माता जी की मृत्यु पर, जीवन बीमा निगम से माताजी के नाम पर चालू पोलिसी की रकम की माँग करते हुए एक प्रत्र तैयार कीजिए

प्रेषक

रमेशचन्द्र

40 मोतीलाल नेहरू रोड,

इलाहाबाद - 3

सेवा में

शाखा प्रबन्धक

जीवन बीमा निगम

इलाहाबाद शाखा

महोदय,

आपको यह सूचित करते हुए अत्यन्त खेद है कि पिछले हफ्ते में हमारी प्रिय माताजी की मृत्यु हुई। आपके प्रतिष्ठान में उनका पाँच लाख रुपये का बीमा हो चुका है। उन्होंने अपनी मासिक किश्तों की राशी नियमित रुप से जमा कराई है। पिछले महीने तक की रसीदें मेरे पास सुरक्षित है। बीमा पॉलिसी पूर्ण होने से पूर्व ही मॉ का निधन हो गया है। आपसे अनुरोध है मेरी माताजी की जीवन बीमा पॉलिसी की रकम और लाभांश जलदी हमें प्राप्त होने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद साहित

दिनांक 10 जून 2016

भवदीय

चन्द्रमोहन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संलग्न

1. पारिवारिक संबन्ध का प्रमाण पत्र
2. जीवन बीमा पॉलिसी संख्या 506816 - बी का पत्र
3. पॉलिसी की अन्तिम किश्त की रसीद
4. आधार कार्ड (नकली कॉपी)

6. ए.टी.एम कार्ड खो जाने पर भुगतान रोकने का अनुरोध करते हुए बैक को पत्र

प्रेषक
महालक्ष्मी
राम निलयम
14 नया स्ट्रीट
आलुवा
सेवा में
प्रबन्धक
यूणियन बैंक
आलुवा शाखा

विषय : एं.टी.एम कार्ड खो जाने से खाते के लेन-देन पर रोक

महोदय

निवेदन है कि युणियन बैंक की आलुवा शाखा में मेरे नाम पर जो चालू खाता है, उसका ए.टी.एम कार्ड आज सुबह मेरी ओर से कहीं नष्ट हो गया है। खाते की संख्या 604137101 है। कृपया मेरे खाते के लेन-देन पर रोक लगाने की कोशिश करे।

आपका विश्वासी

सधन्यवाद

हस्ताक्षर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. चेक के अनादृत होने का पत्र

केनरा बैंक
कोच्चिन शाखा

ता 20-5-2016

सेवा में
श्री. सन्तोष कुमार
श्री निलयम
आलुवा

प्रिय महाशय

आपको यह सूचित करने में हमें बड़ा खेद है कि श्री. तोमस के नाम आपने 10-5-2016 को दस हज़ार रुपये का जो चेक दिया था उसकी हम साख नहीं कर सके। हमने उसे वापस कर दिया है। चेक काटते समय आपने पासबुक शायद नहीं देखी होगी। आपके खाते में केवल दो हज़ार रुपये बाकी है। आपसे प्रार्थना है कि अपनी बचत की रकम पर आवश्यक ध्यान दें। आशा है कि आप हमारी विवशता समझ सकेंगे और आगे भी आपकी सद्भावना बनी रहेगी।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
व्यवस्थापक

5. संपादक के नाम पत्र

कभी कभी समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के संबन्ध में पाठक अपना अभिमत प्रकट करते हैं। वे लोग संपादक के नाम पत्र भेजकर अपना अभिमत या शिकायत प्रकट करते हैं। इन्हीं पत्रों के प्रकाशन से संपादक उस विषय पर औरों का ध्यान भी बाँट सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या के बारे में)

23 महात्मा गाँधी
मार्ग
कानुपुर
जून 5, 2016

सम्पादक महोदय
हिन्दुस्तान टैंम्स
दिल्ली

महोदय,

15 मेय के हिन्दुस्तान टैंम्स समाचार पत्र में श्री विमल पाण्डे द्वारा लिखित सरकार क्यों निष्क्रिय हैं? शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने मिलावट को रोकने का उपाय सुझाये थे।

खाद्यान्नों में मिलावट के कारण उत्पन्न होनेवाली बीमारियाँ और मृत्यु आदि के समाचार नित्य आते रहते हैं। मिलावट की यह बीमारी सारे देश में व्याप्त है। समाचार पत्रों के माध्यम से जनता को इसकी जानकारी मिलती है। लेकिन बहुत सी बातों के संबन्ध में जनता अनभिज्ञ हैं। देश में मिलावट के कारण लोग मरते हैं तथा कैंसर जैसी बीमारियों के शिकार होते हैं।

मिलावट करनेवाले व्यक्तियों को उचित दंड देने के विषय में क्या हमारा कानून अपर्याप्त है? इस प्रकार करनेवालों को मौत केलिए जिम्मेदार ठहराकर उस पर हत्या के अपराध में मुकदमा दायर करना चाहिए। अगर वर्तमान नियमों में इसकी व्यवस्था नहीं है तो सरकार को उन नियमों में आवश्यक संशोधन करना चाहिए।

भवदीय
कृष्ण वेणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. निमन्त्रण पत्र

निमन्त्रण पत्र की रूपरेखा पारिवारिक या निजी पत्रों से भिन्न होती है। ये प्रायः छपे हुए होते हैं। इनमें केवल प्रेषिती के नाम की जगह खाली छोड दी जाती है। इनमें प्रेषक का पता और दिनांक पत्र में नीचे, बायीं ओर लिखे जाते हैं। संबोधन और अभिवादन दोनों ही नहीं होते हैं। स्वनिर्देश केलिए दर्शनाभिलाषी लिखा जाता है और उसके नीचे एक या दो व्यक्तियों के नाम छपे रहते हैं। निमन्त्रण पत्रों में केवल प्रेषिती का नाम स्याही से लिखा जाता है।

अ. विवाह के निमन्त्रण पत्र

श्रीमान/श्रीमती ....

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी प्रिय बेटी रेखा का शुभ विवाह कोट्टयम निवासी श्री राजेन्द्रन का बेटा अखिल से होना निश्चित हुआ है। विवाह की तिथि बुधवार 16 नवंबर, 2016 को निश्चित है। तिरुवन्तपुरम के श्रीमूलम कल्ब में सुबह 10.30 के शुभ मुहूर्त में शादी संपन्न होगी।

आपसे निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार पधारकर विवाह की शोभा बढायें।

दर्शनाभिलाषी

मंगलापुरम

महेन्द्रलाल

तिरुवनन्तपुरम्

सूचना - वधु के साथ जानेवाले 16 नवंबर सबेरे 8 बजे को मंगलापुरम के हमारे घर से बस द्वारा प्रस्तान करेंगे। कृपया सबेरे 7.30 बजे तक अवश्य तैयार होकर आ जाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ. गृह-प्रवेश का निमन्त्रण

श्रीमान / श्रीमती...............

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मयूर विहार में बने हमारे नये भवन का गृह-प्रवेश समारोह 1 दिसंबर 2016 को प्रातःकाल 10 बजे को संपन्न होगा। आपसे अनुरोध है कि आप इस शुभ अवसर पर यहाँ पधारकर हमारी खुशियों का भागीदार बनें।

15 नवंबर 2016 दर्शनाभिलाषी

30 बी मयूर विहार महेष्

नयी दिल्ली इन्दु

अभ्यास केलिए

1. आप गृहमन्त्रालय के कर्मचारी हैं। नबीयत अच्छा न होने पर अर्जित अवकाश मांगने केलिए आवेदन पत्र तैयार कीजिए।
2. 10 जनवरी के दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार श्रीराम कॉलज दिल्ली में एक अर्थशास्त्र के प्राध्यापक का पद है। उसकेलिए आवेदन पत्र तैयार कीजिए।
3. आपका मित्र अपने कॉलेज के क्रिकट टीम का कप्तान बन गया है। इस अवसर पर मित्र को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।
4. अपनी प्रिय पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा माँगते हुए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम आदेश पत्र तैयार कीजिए।
5. अपने मोहल्ले की सफाई केलिए निगम आयुक्त के नाम पत्र लिखिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

6. बैंक में चालू खाता खोलने केलिए आवेदन पत्र तैयार कीजिए।

7. कपडों के नये षो रूम केलिए आवश्यक कपडों की माँग करते हुए मद्रास के किसी प्रख्यात वस्त्रालय के नाम पत्र लिखिए।

8. उधार पर माल देने केलिए ग्राहक की आर्थिक स्थिति के बारे में जानने केलिए उसके साथ जिसका व्यापारिक संबन्ध है उसके नाम गोपनीय पत्र लिखिए।

9. माल की खराबी दशा की सूचना देते हुए किसी व्यापारी के नाम शिकायती पत्र तैयार कीजिए।

10. आपके प्रिय मित्र की बहन की शादी तय हुई है। उसका निमन्त्रण पत्र तैयार करके मित्र की मदद कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग - II

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कबीरदास

कबीरदास हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठतम विभूति हैं। वे निर्गुण भक्तिधारा की श्रानाश्रयी शाखा और सन्तकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। कहा जाता है कि कबीर एक विधवा ब्राह्मणी की सन्तान थे, जिसने बच्चे को लोकापवाद के भय से जनमते ही काशी के लहरतारा तालाब के पास फेंक दिया। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने कबीर को पाया और निःसन्तान होने के कारण पुत्र की तरह पाला पोसा। बचपन से ही उनका मन भक्ति की ओर झुका हुआ था। बडे होने पर उन्होंने रामानन्द को अपना गुरू बनाया। कबीर ने विवाह भी किया। उनकी पत्नी का नाम लोई था। कमाल और कमाली इनके बेटा-बेटी थे। स्वयं आशिक्षित होते हुए भी अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने जीवन अनुभवों को ग्रहण किया और काव्य रचना की। कबीर के जीवन अनुभव ही उनके काव्यों की बुनियाद है। उन्होंने अपनी आँखों से देखा, जो अनुभूति हासिल की उसी की आम-जनता की भाषा में अभिव्यक्ति दी।

कबीरदास सिर्फ कवि नहीं थे। वे सन्त पहले और कवि बाद में थे। वे समाज को बदलना चाहते थे। इसकेलिए उन्होंने कविता को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। उन्होंने अपनी कविता के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माध्यम से समाज में प्रचलित अन्धविश्वासों और अनाचारों के खिलाफ संघर्ष किया था। उन्होंने धार्मिक पाखंडों का प्रहार किया और सामाजिक रूढियों पर चोट की। हिन्दु मुसलमान के बीच उन्होंने किसी प्रकार के भेद-भाव को स्वीकार नहीं किया। वे यह मानते थे कि मानव को मानव से पृथक करना सामाजिक अपराध ही नहीं परमात्मा की उपासना में बाधक भी है। भारतीय सन्तों में कबीर का व्यक्तित्व अप्रतिम था। आध्यात्मिक खोज में, अपने दार्शनिक सिद्धान्तों को स्थिर करने में, अपनी साधना का मार्ग बनाने में और अपने सिद्धान्तों के प्रचार में वे सर्वथा मौलिक और स्वतन्त्र थे।

कबीर की रचनाओं के संबन्ध में मतभेद है। कहा जाता है कि कबीरदास स्वयं कुछ पढे लिखे नहीं थे। वे कविता गाते थे। उन्होंने अपनी कविता को अक्षरबद्ध नहीं किया था। उनके प्रमुख शिष्य धर्मदास ने सबसे पहले उनकी वाणियों का संग्रह 'बीजक' के नाम से तैयार किया। इसके तीन भाग है : (1) साखी (2) सबद और (3) रमैनी। साखी की पंक्तियाँ दोहे छंद में, सबद पद में और रमैनी चौपाइयों में है। घुमक्कड प्रवृत्ति के कारण कबीर की भाषा में भोजपुरी अवधी, ब्रज और खडीबोली का मिश्रण है। जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सघुक्कडी भाषा कहा है।

साखी

साघु सीप समुंद के, सतगुर स्वाती बुंद।
तृषा गई इक बुंद ते, क्या लौ करौ समुंद।।1।।
जाके मुंह माथा नहीं, नाहिं रूप कुरूप।
पुहुप बास ने पातरा, ऐसा तत्त अनूप ।।2।।
ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपना तन सीतल करै औरन को सुख होय।।3।।
साई इतना दीजिए, जामैं कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।4।।
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जाति।
देखत ही छिप जाइंगे, ज्यौं तारे परिभाति।।5।।
माला फेरत जग मुआ, मिटा न मनका फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।6।।
चकइ बिछुरी रैन की, आई मिलै परभाति।
जो नर बिछुरे राम सों, ते दिन मिलै न राति।।7।।
बृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर।।8।।
हम घर जाला अपना लिए मुराडि हाथि।
अब घर जालौ तास का, जो चलै हमारे साथि।।9।।
दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारंबार।
तरुवर ज्यों पत्ता झडै, बहुरि न लागे डार।।10।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरदास

महाकवि सूरदास भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की कृष्णभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनका जन्म दिल्ली के निकट 'सीहि' नामक गाँव में एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे अन्धे थे और आगरा और मथुरा के बीच साधु के रूप में रहते थे। वहाँ इनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई और तभी इन्होंने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वल्लभाचार्य ने इनकी नियुक्ति श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तन करने केलिए कर दी। वहाँ रहकर उन्होंने सुरसागर की रचना की।

अष्टछाप के कवियों में अथवा कहें तो कृष्णकाव्य परंपरा के कवियों में सूरदास का सर्वोच्च स्थान है। सूरकाव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है। वात्सल्य और श्रृंगार के वर्णन में वे बेजोड हैं। सूरदास वात्सल्य रस के आचार्य हैं। इनका बाललीला वर्णन अपनी सहजता, मनोवैज्ञानिकता एवं स्वाभाविकता में अद्वितीय है। वात्सल्य की ही भाँति भक्ति के साथ श्रृंगार को जोडकर उसके संयोग एवं वियोग पक्षों का जैसा मार्मिक वर्णन उन्होंने किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

सूरदास की मुख्य रचनाएँ तीन है - सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी। सूरसागर इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है और यही सूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की अमर कीर्ति का आधार है। सूर की रचना को पद रचना कहा जाता है। सूरदास की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा होते हुए भी बोल-चाल की भाषा के बहुत समीप है। सूर के कारण ही ब्रजभाषा को भक्तियुग की काव्यभाषा का गौरव स्थान मिला था। भाषा को प्रवाहमयी बनाने केलिए उन्होंने संगीत और लय का भी इस्तेमाल किया था। संगीतात्मकता ही सूर काव्यों की बडी शक्ति है।

विनय तथा भक्ति

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उडि जहाज़ कौ पंछी, पुनि जहाज पर आवै।।
कमल-नैन कौं छाँडि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंगा कौ छाँडि पियासौ, दुरमाति कूप खनावै।।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै।
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

बाललीला

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेर मुख लपटायौ।।
देखि तुहीं छींके पर भाजन ऊँचे धरि लटकायौ।
हौं जू कहत नान्हे कर अपनै हौं कैसे करि पायौ।।
मुख दधि पोंछ कहत नँदनन्दन दोना पीठि दुरायौ।
डाकि सांटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ।।
बाल-विनोद-मोद मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव विरंचि नहीं पायौ।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भ्रमरगीत

ब्रज के बिरही लोग दुखारे।
बिन गोपाल ठगे से ठाढे, अति दुर्बल तन कारे।
नंद जसोदा मारग जोवति, निसि-दिन साँझ सकारे।
चहूँ-दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत, अँसुवन बहत पनारे।
गोपी ग्वाल गाई, गो सुत सब, अतिही दीन बिचारे।
सूरदास-प्रभु बिनु यौं देखियत, चंद बिना ज्यों तारे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिहारीलाल

बिहारीलाल रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कवि हैं। उनका जन्म सन् 1600 ई. के लगभग ग्वालियर राज्य के बसुपुरा नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनका बचपन बुंदेलखंड में बीता। तरुणावस्था में ये मथुरा चले आये थे। मथुरा में इनकी ससुराल थी। इनकी कोई सन्तान नहीं थी। इसलिए इन्होंने अपने भतीजे निरंजन को गोद ले लिया था। जयपुर के महाराजा जयसिंह के दरबार में इनको काफी प्रतिष्ठा मिली थी। वहाँ वे राजकवि रहे थे। राजा जयसिंह की प्रेरणा से बिहारी ने 'सतसई' की रचना की। कहा जाता है कि राजा जयसिंह ने इनके प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण मुद्रा भेट की थी।

बिहारी की कीर्ति का एकमात्र आधार बिहारी-सतसई है। इसमें लगभग 719 दोहे हैं। प्रत्येक दोहा हिन्दी साहित्य का एक रत्न माना जाता है। बिहारी की काव्यभाषा सरस और मधुर साहित्यिक ब्रजभाषा है। उसमें जहाँ तहाँ बुन्देलखंडी, अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं। उन्होंने मुक्तक शैली में काव्य रचना की। दोहे जैसे छोटे से छंद में उन्होंने, इतने भाव भर दिए कि 'गागर में सागर' भर देने की उक्ति चरितार्थ हो गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिहारी की कविता का मुख्य विषय श्रृंगार है। बिहारी ही नहीं रीतिकाल के हर श्रृंगारी कवि के आकर्षण का प्रधान केन्द्र नारी का मादक रूप है। बिहारी ने नारी के सहज रूप की अपेक्षा उसके मादक रूप को ही ध्यान में रखा है। उनकी नारी कामिनी है, युवती है अनुरागवती है और मादक भी है। श्रृंगार के अतिरिक्त भक्ति, नीति और प्रकृति के दोहे भी उन्होंने लिखे हैं। सन् 1663 ई.में बिहारी का देहावसान हो गया।

दोहे

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।।
कनक-कनक ते सौगुनी, मदकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।।
पत्राहीं तिथि पाइयत वा घर के चहूँ पास।
नितप्रति पून्यौई रहै आनन ओप उजास।।
नर की अरु नल नीर की एको गति कर जोय।
जेतो नीचे ह्वै चले, तेतो ऊँचो होय।।
कोऊ कोटिक संग्रहौ, कोऊ लाख हज़ार।
मो सम्पत्ति जदुपति सदा, बिपति-बिदारनहार।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक संभ्रात वैश्य परिवार में सन् 1889 ई.में हुआ था. सुंघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध श्री देवीप्रसाद इनके पिता थे। श्री देवीप्रसाद की मृत्यु तब हो गई जब प्रसाद मात्र तेरह साल के थे। ये वाराणसी के क्वींस कॉलेज के छात्र थे, जहाँ इन्होंने आठवीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा पाई थी। स्कुल छूटने के बाद प्रसाद ने घर पर ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दु तथा फारसी भाषाओं का अध्ययन किया था। काशी के प्रसिद्ध विद्धान दीनबंधु ब्रह्मचारी से इन्होंने संस्कृत के प्राचीन साहित्य का गंभीर ज्ञान प्राप्त किया। एक-एक करके दो पत्नियों की अकाल मृत्यु के कारण इनका तीसरा विवाह भी हुआ। इनके पुत्र रत्नशंकर का जन्म इसी तीसरी पत्नी से हुआ था।

प्रसाद अत्यंत सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। इनका परिवार शैव था। इसीलिए प्रसाद का व्यक्तित्व भी शैव-दर्शन से प्रभावित था। इनका जीवन अत्यंत नियमित था। शतरंज, बागवानी, शास्त्र-चर्चा और कविता-पाठ इनके मनोविनोद के साधन थे। इनको संगीत, चित्र और मूर्तिकला से भी गहरा अनुराग था, पर प्रसाद का अधिकांश समय अपने व्यावसायिक कारोबार की देखभाल में व्यतीत हो जाया करता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयशंकर प्रसाद की प्रारंभिक काव्य-रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं। 'कानन कुसुम' और 'प्रेम पथिक' इनकी प्रारंभिक रचनाएँ हैं। छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन सबसे पहले 'झरना' में होते हैं। 'झरना', 'आँसू' तथा 'लहर' इसकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं और 'कामायनी' इनकी अंतिम एवं प्रौढ़तम काव्य-कृति है। 'कामयानी' में मानव-सभ्यता के विकास की मनोवैज्ञानिक कथा है।

जयशंकर प्रसाद का रचना-संसार बहुत विस्तुत है। इन्होंने कविता के अतिरिक्त नाटक, उपन्यास, कहानी और समीक्षात्मक निबंध लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। नाटक के क्षेत्र में तो इनका स्थान सर्वोच्च है। इनके नाटकों के सुंदर गीत इनके कविह्दय के परिचायक हैं। इनके उपन्यासों तथा कहानियों में भी गद्यकाव्य-सा लालित्य है।

प्रसाद की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। इन्होंने अपने काव्य में प्रतीक विधान और लाक्षणिक शैली का प्रयोग कर अपने सूक्ष्म भावों को मूर्त रूप प्रदान किया है। कल्पना की मनोरमता, भावुकता और भाषा-शैली की प्रौढ़ता को इनकी रचनाओं में सर्वत्र देखा जा सकता है। 'आँसू' से लेकर इनकी सभी मुक्तक और प्रबंधात्मक रचनाएँ गीति शैली में प्रस्तुत हैं। गीतात्मकता की यह प्रवृत्ति इनके ख्यात महाकाव्य 'कामायनी' में भी मौजूद है। 48 वर्ष की अल्पायु में क्षय रोग से सन् 1936 ई.में इनका देहावसान हो गया।

प्रसाद की रचनाएँ निम्नलिखित हैं :

काव्य : कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, चित्राधार, प्रेम पथिक, झरना, आँसू, लहर, कामायनी

नाटक : राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, स्कंदगुप्त, एक घूँट, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपन्यास : कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
कहानी संग्रह : छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल
निबंध : काव्य और कला तथा अन्य निबंध

ले चल वहाँ भुलावा देकर

ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी -
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।
जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,
ढीले अपनी कोमल काया।
नील नयन से दुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे।

जिस गंभीर मधुर छाया में -
विश्व चित्र-पट चल माया में -
विभुता विभु-सी पड़े दिखाई,
दुख-सुख वाली सत्य बनी रे।
श्रम-विश्राम क्षितिज-वेला से -
जहाँ सृजन करते मेला से -
अमर जागरण उषा नयन से -
बिखराती हो ज्योति घनी रे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के महिषादल में हुआ। उनके पिताजी को महिषादल राज्य में प्रतिष्ठित स्थान था। इसलिए ही निराला की शिक्षा राजघराने में सुचारु ढंग से हुई। वहाँ उन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेज़ी, और हिन्दी का अच्छा अध्ययन किया। चौदह वर्ष की आयु में उनका विवाह मनोहरा देवी से हो गया। कुछ समय तक राज्य की नौकरी में रहे, लेकिन पत्नी की मृत्यु के बाद वह छोड दी। फिर रामकृष्ण मिशन के समन्वय पत्र का संपादन-कार्य किया। कुछ काल तक 'मतवाला' नामक साप्ताहिक पत्र चलाया। निराला जी का जीवन अनेक अभावों एवं विपत्तियों का जमावडा था। वैयाक्तिक और साहित्यिक जीवन में उन्हें अनेक मुसीबतों को झेलना पडा था। कविता और जीवन में वे सचमुच क्रान्तिकारी रहे थे।

निराला जी छायावाद के प्रमुख प्रतिनिधि कवि है। लेकिन उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। कविता के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध आलोचना और संस्मरण भी लिखे थे। भावों की विविधता के साथ साथ निराला की कविता में भाषा एवं शैली की विविधता भी पाई जाती है। हिन्दी कविता में मुक्त छंद का प्रवर्तन करने का श्रेय निराला को है। इनके काव्य में छायावाद, रहस्यवाद और प्रगतिवाद तीनों के दर्शन होते है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निराला की प्रमुख रचनाएँ

काव्य : अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत गुंज, सांध्य काकली

उपन्यास : अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, चोटी की पकड, काले कारनामे

कहानी : चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, लिली

निबन्ध : चाबुक, प्रबन्ध प्रतिमा, प्रबन्ध परिचय

रेखाचित्र : कुल्लीभाट, बिल्लेसुर, बकरिहा

नाटक : शकुन्तला

विधवा

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शान्त, भाव में लीन
वह क्रूर-काल-ताडंव की स्मृति-रेखा-सी,
वह टूटै तरु की छटी-लता-सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।
षड्ऋतुओं का श्रृंगार
कुसुमित कानन में नीरव-पद-संचार,
अमर कल्पना में स्वच्छन्द विहार-
व्यथा की भूली हुयी कथा है,
उसका एक स्वप्न अथवा है।
उसके मधु-सुहाग का दर्पण
जिसमें देखा था उसने
बस एक बार बिम्बित अपना जीवन-धन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अबल हाथों का एक सहारा-
लक्ष्य जीवन का प्यारा वह ध्रुवतारा
दूर हुआ वह ब़हा रहा है
उस अनन्त पथ से करुणा की धारा।
है करुणा-रस से पुलकित इसकी आँखें,
देखा तो भीगीं मन-मधुकर की पाँखें;
मृदु रसावेश में निकला जो गुंजार
वह और न था कुछ, था बस हाहाकार!
उस करुणा की सरिता के मलिन पुलिन पर,
लघु टूटी हुई कुटी का, मौन बढ़ाकर
अति छिन्न हुए भीगे अंचल में मन को--
दुःख रुखे-सूखे अधर त्रस्त चितवन को
वह दुनिया की नज़रों से दूर बना कर,
रोती है अस्फुट स्वर में;
दुःख सुनता है आकाश धीर--
निश्चल समीर,
सरिता की लहरें भी ठहर-ठहरकर।
कौन उसको धीरज दे सके,
दुःख का भार कौन ले सके?
यह दुःख जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव, अत्याचार कैसा घोर और कठोर है।
क्या कभी पीछे किसी के अश्रु जल?
या किया करते रहे सबको विकल?
ओस-कण-सा पल्लवों से झर गया
जो अश्रु, भारत का उसी से सर गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामधारी सिंह दिनकर

छायावादोत्तर काल के सशक्त कवि ये दिनकर। उनका जीवन काल सन् 1908 से 1974 तक रहा। दिनकर का जन्म बिहार जिला मुंगेर में स्थित सिमरिया में हुआ था। यद्यपि उन्होंने पहले बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की थी लेकिन अपनी मेहनत से मुजफ्फरपुर के कॉलेज में हिन्दी विभागध्यक्ष, राज्यसभा के सदस्य, भगलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार आदि उच्च पद हासिल करने में वे सक्षम हुए थे। दिनकर जी एक अच्छे गद्यकार और एक अच्छे संस्कृति चिन्तक थे। इतिहास और संस्कृति का उनका विराट अवगाहन उन्हें एक स्वतन्त्र चेता मनीषी के रूप में स्थापित करता है।

दिनकर के काव्य की सबसे बडी विशिष्टता यही है कि वह छायावादी अवसाद तथा निराशा से मुक्त होकर देश के परिवेश के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया प्रकट करता है। जैसे नगेन्द्र ने सूचित किया है कि उनकी कविता अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरुक है। उन्होंने प्राचीन मूल्यों का नये जीवन सन्दर्भो के परिप्रेक्ष्य में आकलन किया है; साथ ही वर्तमान की समस्याओं को प्राचीन जीवन्त मूल्यों से जोडने का श्रम भी किया है।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं — कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशीं आदि। कुरुक्षेत्र में उन्होंने भीष्म के माध्यम से बुद्धि के ऊपर संवेदनशील दिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के शासन की संकल्पना की है। रश्मिरथी में दिनकर ने कर्ण के चरित्र को आधुनिक मानववाद के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित उर्वशी में उर्वशी और पुरूरवा के प्राचीन आख्यान को नया अर्थ देने का श्रम हुआ है। प्रेम और सौन्दर्य के साथ आध्यात्मिक भंगिमा प्रदान करने का प्रयत्न भी इसमें किया गया है। संस्कृति के चार अध्याय दिनकर जी की ख्यातिप्राप्त गद्य रचना है, जिसपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी दिया गया है।

यह मनुज

यह मनुज, ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश,
कुछ छिपा सकते न जिससे भूमि या आकाश।
यह मनुज, जिसकी शिखा उद्दाम।
कर रहे जिसको चराचर भक्तियुक्त प्रणाम।
यह मनुज, जो सृष्टि का श्रृंगार।
ज्ञान का विज्ञान का, आलोक का आगार।
पर सको सुन तो सुनो, मंगल जगत के लोग!
तुम्हें छूने को रहा जो जीव कर उद्योग—
वह अभी पशु है: निरा पशु, हिंस्र, रक्त-पिपासु,
बुद्धि उसकी दानवी है स्थूल की जिज्ञासु,
कड़कता उसमें किसी का जब कभी अभिमान,
फूँकने लगते तभी, हो मत्त, मृत्यु-विषाण।
यह मनुज ज्ञानी, श्रृगालों, कुक्कुरों से हीन
हो किया करता अनेकों क्रूर कर्म मलीन।
देह ही लडती नहीं, हैं जूझते मन-प्राण,
साथ होते ध्वंस में इसके कला-विज्ञान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस मनुज के हाथ से विज्ञान के भी फूल,
वज्र होकर छूटते शुभ धर्म अपना भूल।
यह मनुज, जो ज्ञान का आगार?
यह मनुज, जो सृष्टि का श्रृंगार।
नाम सुन भूलो नहीं, सोचो-विचारो कृत्य।
यह मनुज, संहार-सेवी, वासना का भृत्य।
छद्म इसकी कल्पना, पाषण्ड इसका ज्ञान,
यह मनुष्य मनुष्यता का घोरतम अपमान।
'व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय'
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय।
श्रेय उसका, बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत,
श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत;
एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड दे जो, बस, वही ज्ञानी, वही विद्वान,
और मानव भी वही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कीर्ति चौधरी

आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों में कीर्ति चौधरी का विशिष्ट पहचान है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के नईपुर गाँव में हुआ था। बचपन का नाम कीर्तिबाला सिन्हा है। लेकिन वे कीर्ति चौधरी के नाम से लिखती हैं। इनका बचपन गाँव में व्यतीत हुआ। एम.ए. आगरा विश्वविद्यालय से किया। अभिव्यक्ति एवं शैली की सादगी इनके काव्य की अपनी विशेषता है। कवयित्री होने के साथ-साथ वे घरेलू जीवन को भी समान महत्व देती हैं। वस्तुतः जीवन के प्रति उनका यह दृष्टिकोण उनकी कविता को एक सबल यथार्थ प्रदान करता है। उनकी कविता में जीवन के प्रति एक बडी विमल-स्फूर्ति अनुस्यूत मिलती है। करीने से सजी हुई व्यवस्थित ज़िन्दगी उन्हें पसन्द है और उस जीवन के प्रति उनकी अडिग आस्था है।

'कविताएँ और खुले हुए आसमान के नीचे' उनके प्रसिद्ध काव्य संकलन है 'झुमझुमी' एकमात्र कहानी संग्रह है। अज्ञेय ने अपने 'तीसरा सप्तक' में इनकी रचनाओं का संकलन किया है। कीर्ति चौधरी का साहित्यिक व्यक्तित्व प्रयोगवाद एवं नई कविता के अन्य कवियों से भिन्न है। उनकी कविता कहने का लहजा बातचीत का है।

एकलव्य

चाहा बस तुमने हैं!
दाहिना अँगूठा यह!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह तो समर्पित था,
मेरा हर लक्ष्य उपलक्ष्य,
उपकरण, साध्य-
चरणों में पहले से अर्पित था।
बाण यह किसी का,
प्रत्यंचा भी उसी की थी।
हाथ ये किसी के,
इन हाथों की चंचल गति-यह भी उसी की थी!
मैंने तो इनको निर्माल्य-सा चढ़ाया था।
लक्ष्य अगर बेधे थे,
बाण अगर साधे थे -
मानो उन चरणों पर चढ़े हुए पुष्पों को
बार-बार माथे से लगाया, सिर नवाया था।
सब था 'तुम्हारा'—
अरे, सब कुछ तुम्हारा!
तुम्हीं उससे अभिज्ञ रहे।
अथवा वह मेरा समर्पण सब झूठा था।
मेरी वह निष्ठा,
वह प्राणों की आकुल प्रतिष्ठा
जिसे अर्पित थी—
तुम थे नहीं!
सिर्फ माटी की मूरत
क्या
माटी की मूरत थी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोरख पाण्डे

गोरख पाण्डे क्रान्तिकारी कवि रहे थे। मार्क्सवाद में उनकी अगाध आस्था थी। छोटी उम्र में अपनी इच्छा के बगैर उन्हें शादी करनी पडी। मार्क्सवाद से अनभिज्ञ उस ग्रामीण स्त्री के प्रति उनके मन में कोई लगाव नहीं था। इसलिए 1970 के आसपास जब वे जे.एन.यू के शोध छात्र रहे थे, एक संभ्रान्त वर्ग की लडकी से प्रेम करने लगे। पर उस लड़की को उनकी कविताएँ ही प्रिय थी; कवि नहीं। इसी रिश्ते के कारण उनका मन असन्तुलित हो गया और 26 जनवरी 1989 को उन्होंने आत्महत्या की। गोरख पाण्डे का पहला कविता संग्रह 'जागते रहो सोनेवालो' 1983 में प्रकाशित हुआ। इसे ओम प्रकाश स्मृति पुरस्कार मिला। उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित संग्रह है – 'स्वर्ग से विदाई'।

गोरख की ज़िव्दगी, आत्महत्या और सर्जना इस बात का निशान है कि मार्क्सवादी बनने व क्रान्ति का हमसफर होने से कोई भी अपने सहज संस्कार को अतिक्रमण नहीं कर सकता। इसकेलिए आत्मालोचना से निरन्तर गुजरना होगा, आम जनता की ज़िन्दगी से तादात्म्य साबित करना होगा। तभी कोई संस्कृतिकर्मी अपने सहज वर्ग संस्कार को उल्लंघित कर सकता है; अन्यथा नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बन्द खिडकियों से टकराकर

घर घर में दीवार हैं
दीवारों में बन्द खिड़कियाँ हैं
बन्द खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह
नई बहु है, घर की लक्ष्मी है
इनके सपनों की रानी है
कुल की इज़्ज़त है
आधी दुनिया है
जहाँ अर्चना होती 'उसकी
वहाँ देवता रमते हैं
वह सीता है सावित्री है
वह जननी है
स्वर्गादपि गरीयसी है
लेकिन बन्द खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहुलुहान गिर पड़ी है वह
कानून समान है
वह स्वतन्त्र भी है
बड़े-बड़ों की नज़रों में तो
धन का एक यन्त्र भी है
भूल रहे वे
सबके ऊपर वह मनुष्य है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे चाहिए प्यार
चाहिए खुली हवा
लेकिन बन्द खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहुलुहान गिर पड़ी है वह
चाह रही है वह जीना
लेकिन घुट-घुटकर मरना भी
क्या जीना?
घर-घर में शमशान-घाट हैं
घर-घर में फाँसी-घर हैं
घर-घर में दीवारे हैं
दीवारों से टकराकर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है
हम जो जिन्दा हैं
हम सब अपराधी हैं
हम दण्डित हैं।

('स्वर्ग से विदाई' से)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साखी

कबीर के दोहे

संक्षिप्त भावार्थ

1. ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि कबीर ने गुरु की महिमा का वर्णन कर उसे ईश्वर से भी बडा बताया है। उनका कहना है कि सच्चा साधक समुद्र की सीप की तरह है और गुरु स्वाति नक्षत्र में बरसनेवाली बूंद के समान। गुरु से प्राप्त ज्ञान से साधक की प्यास बुझ जाती है। जैसे सीप को समुद्र की आवश्यकता नहीं वैसे ही सच्चे साधक केलिए वेद-शास्त्र ग्रंथ व्यर्थ है। उसके लिए सच्चे गुरु द्वारा दिया ज्ञान ही काफी है।

2. निर्गुण एवं निराकर परब्रह्म का न तो कोई मुख है और न ही "मस्तक। न वह सुन्दर है और न ही असुन्दर। वह तो निर्गुण निराकार है। उसका कोई आकार नहीं। वह निर्गुण ब्रह्म फूलों की सुगंघ से भी अधिक सूक्ष्म है। वह विलक्षण व अद्वितीय है।

3. बात ऐसी कीजिए जिससे कि मन का गर्व नष्ट हो जाए। अर्थात मीठी बात करने से बोलनेवाला स्वयं अपना शरीर शीतल करता है और दूसरों को भी सुखी करता है। अतः सदा से मितभाषी बने।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. कबीर कहते हैं कि हे ईश्वर उतना ही धन-ऐश्वर्य दीजिए जितना कि परिवार के भरण-पोषण केलिए ज़रूरी है। न मैं भूखा रह सकूँ और न मेरे यहाँ से कोई साधु भूखा ही लौट जाए। कहने का मतलब यह है कि धन सम्पत्ति जितनी आवश्यक है उतनी ही हो और उसका उपयोग सज्जनों के हित में किया जाए।

5. यहाँ मानव-जीवन की नश्वरता पर कबीरदास उपमा के माध्यम से समझा रहे हैं। जैसे पानी का बुदबुदा क्षणिक होता है वैसे ही मानव जाति भी। जैसे प्रभात होते ही तारे कहीं गुम हो जाते हैं,वैसे देखते ही देखते मानव भी कहीं विलीन हो जाएँगे।

6. माला जपते जपते युग बीत गया लेकिन कुछ नहीं हुआ। अगर मन के भीतर की बुराइयाँ नहीं मिटा दीं तो जप कर्म व्यर्थ हो जाता है। अतः माला घुमाने की अपेक्षा मन को बुराइयों से घुमा देना होगा और अच्छे कर्म में लगा देना होगा।

7. कबीर कहते हैं कि यद्यपि चकई पंछी रात को बिछुड जाते हैं पर दिन होते ही उनका मिलन होता है। वे सिर्फ रात को अलग रहने केलिए अभिशप्त हैं। लेकिन जो व्यक्ति राम से अलग होता है, फिर रात हो या दिन किसी भी वक्त मिलन असम्भव है। इसलिए कबीर की यही सलाह है कि हमेशा राम अर्थात ईश्वर के प्रेम या भक्ति में तल्लीन रहना चाहिए।

8. वृक्ष कभी अपना फल नहीं खाता, नदी कभी अपना पानी इकट्ठा नहीं कर लेती। साधु-सज्जन परमारथ अर्थात परोपकार केलिए शरीर का उपयोग करते हैं। आशय यह है कि वृक्ष, नदी और साधु-सज्जनों की तरह हमें परोपकार में जीवन व्यतीत करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. जो अपना सब कुछ छोड देता है, वही ईश्वर साक्षात्कार केलिए योग्य बन जाता है। इसी बात को कबीर ने प्रतीक के जरिए इस दोहे में व्यक्त किया है। मैं अपना घर जलाकर, मशाल हाथ लिए आगे बढ रहा हूँ। मैं उनका भी घर जलाऊँगा जो मेरे साथ चलेगा। यहाँ घर अपनत्व, स्वार्थ, विषयवासना और दौलत का प्रतीक है।

10. यहाँ कवि कबीर मानव जन्म की महत्ता हमें समझाते हैं। यह जन्म मानव को बडी कठिनाई से अथवा सदकर्मो से प्राप्त होता है। जैसे पेड से पत्ते झड जाने के बाद वह पेड पर पुनः नहीं लगता। ऐसे ही एक बार नष्ट हो जाने पर पुनः यह जन्म मानव को नहीं मिलेगा। सद्कर्म से इस जन्म को सार्थक बनाने का उपदश यहाँ दिया गया है।

शब्दार्थ –

1.	समुंद	-	समुद्र
	स्वाती	-	एक नक्षत्र विशेष का नाम
	बुंद	-	बूंद
	तृषा	-	प्यास (ज्ञान की)
2.	रूप	-	सुंदर
	कुरूप	-	असुंदर
	पुहुप	-	फूल
	वास	-	सुगंध
	पतरा	-	पतला
	तत्त	-	परब्रह्म
	मसान	-	श्मशान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.	आपा	- गर्व, अभिमान
	सीतल	- आनन्दित करना
	औरन को	- दूसरों को
4.	साई	- ईश्वर
	जामैं	- जिसमें
	कुटुम	- परिवार
	समाय	- पूरा पडे
5.	बुदबुदा	- बूलबुला
	परभाति	- प्रभात
6.	मनका फेर	- मन के अन्दर छिपी हुई अनेक बुराइयाँ
	कर का	- हाथ का
	मनका	- माला
	डारि कै	- छोडकर
	मन का	- मन की
	फेर	- जपना
7.	चकई	- एक प्रकार के पक्षी जो रात को बिछुडने पर दिन में मिलते हैं।
	बिछुरी	- बिछुडना, अलग होना
	रैन	- रात
	बासुरि	- दिन में
8.	बृच्छ	- वृक्ष
	कबहूँ	- कभी
	भखै	- खाता है।
	संचै	- एकत्र करना
	नीर	- जल।
	परमारथ	- परोपकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. मुराडा - मशाल
जाला - जला दिया
घर - स्वार्थ या विषय वासना का घर
तासका - उसका
हमारे साथि - हमारे साथ

10. मनिषा - मानव का
देह - शरीर
दुर्लभ - कठिन
तरवर - पेड
बहुरि - फिर

सूरदास के पद

संक्षिप्त भावार्थ

1. सूरदास कहते हैं कि मेरा मन भगवान कृष्ण को छोडकर अन्यत्र सुख नहीं पाता। उसे कृष्ण के चरणों में सुख मिलता है। जैसे जहाज का पंछी उडकर जाता है और फिर से जहाज पर लौट आता है। भगवान श्रीकृष्ण की महत्ता को छोडकर कोई अन्य देवताओं का ध्यान क्यों करें। पवित्र गंगा को छोड़कर कोई मूर्ख ही कुँआ खुदवाता है। जिस भौरे ने कमल का रसपान किया हो उसे करील-फल (कडुआ) क्यों पसन्द आएगा। सूरदास कहते हैं कि कामधेनु को छोडकर कोई बकरी को क्यों दुहेगा। आशय यह कि प्रभु की भक्ति ही कामनाओं की पूर्ति करती है अतःउसे ही अपनाना उचित है।

2. इस पद में माखन चोरी से इनकार करनेवाले बालकृष्ण का तथा उसे गले लगानेवाली माता यशोदा का चित्रण किया है। कृष्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी माँ से कहते हैं कि माँ मैंने माखन नहीं खाया। मेरे सारे मित्र लगता है मेरे दुश्मन बने हैं, सबने मिलकर मेरे मुख पर माखन लगाया है। माँ तूने माखन का पात्र ऊँचे छींके पर लटकाकर रख दिया है। मैं अपनी छोटी सी बाँहों से भला उसे कैसे पा लेता। अपनी पीठ के पीछे दोना को छिपाकर मुख पर लगे दही को पोंछते हुए श्रीकृष्ण माखन न चुराने की बात का तर्क देते हैं। इसे देखकर माता यशोदा उसे गले लगा लेती है। हाथों में ली लाठी फेंक माता यशोदा हँसते हुए कृष्ण को गले लगाती हैं। बालक कृष्ण की विनोदपूर्ण बातें माता यशोदा के मन को मोहित कर देती है। सूरदास कहते हैं कि यशोदा माता के भाग्य में यह सुख है जो भक्ति का प्रताप है और जिसे शिव तथा ब्रह्मा भी नहीं पा सके। तात्पर्य यह कि इसमें श्रीकृष्ण के लीलापूर्ण तर्क और यशोदा मैया के भाव-विभोर रूप को प्रस्तुत किया है। इसमें वात्सल्य रस मिलता है।

3. भ्रमरगीत की इन्हीं पंक्तियों में कृष्ण वियोग में दुखी गोकुलवासियों का वर्णन है। गोपाल के बिना गोप बालक कृश और काले पड गए हैं। माता यशोदा दिन भर कान्ह-कान्ह की रट लगाई रहती है। नंद-जसोदा दिन-रात गोपाल की प्रतीक्षा करते रहते हैं, गोपियों, ग्वाल, गाय, बछडे सब कृष्ण वियोग में हीन-दीन हो गए हैं। उनकी दशा चन्द्रमा के बिना तारों की तरह हो गई है।

शब्दार्थ

1. अनत - दूसरे स्थान पर।
   पंछी - पक्षी
   फिरि - लौटकर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमलनैन - जिनके नेत्र
कमल के समान सुन्दर है (भगवान कृष्ण)

महातम - महत्ता।

और देव - अन्य देव

ध्यावै - ध्यान करे।

परम गंगा - परम पवित्र गंगा नदी।

पियासौ - प्यासा व्यक्ति।

दुरमति - मूर्ख

कूप खनावै - कुँआ खोदना है।

जिहिं - जिस

मधुकर - भौंरा।

अम्बुज-रस - कमल रस

चौख्यौ - पीया है।

करील फल - कीकर के पेड के कडुवे फल।

भावै - अच्छा लगता है।

कामधेनु - स्वर्ग की वह काल्पनिक गाय जो सागर-मन्थन के समय 14 रत्नों के साथ निकलती थी। यह गाय सदा दूध देती है। यहाँ तात्पर्य है कि प्रभु की भक्ति जो सब कामनाओं को पूरा करनेवाली है।

छेरी - बकरी

2. ख्याल परै - जान पडता है।

भाजन - पात्र

धारि - रखकर।

कर - हाथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दधि	-	दही
दोना	-	पत्ते का बना थैला।
दुरायौ	-	छिपाकर
साँटि	-	लकडी।
कंठ	-	गले से।
मोह्यो	-	मोहना
बिरंचि	-	ब्रह्मा

3.

बिरही	-	विरही
कारे	-	काले
निसि - दिन	-	रात दिन
बिचारे	-	बेचारे

बिहारीलाल के दोहे

संक्षिप्त भावार्थ

1. अपनी सत्सई की निर्विघ्न पूर्ति केलिए यहाँ कवि बिहारी राधिका से प्रार्थना करते हैं। इसे मंगलाचरण कहते हैं। कवि कहते हैं कि वही नागरी राधिका मेरी भवबाधा को दूर कर सकती है, जिसके तन की छाया पडने पर कृष्ण के श्याम रंग भी हरित द्युति में परिणित होता है।
2. सोने में धतूरे से सौ गुना अधिक मादकता होती है। धतूरे को खाने से दुनिया पागल बन जाती है और सोने को पाकर वह पागल अर्थात उन्मत्त बनती है। आशय यह है कि सोना मनुष्य को धतूरे से ज़्यादा पागल या उन्मत्त बना देता है। धन-दौलत का नशा पागल बना देनेवाला होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. यहाँ कवि बिहारी अपनी नायिका के मुखमंडल के सौन्दर्य का वर्णन कर दिया है। नायिका का मुखमंडल इतना सुन्दर है जैसे पूनम का चाँद। तभी तो उसके घर के आसपास रोज़ पूर्णमासी रहती है और सही तिथि केलिए पत्रा देखना होता है।

4. मनुष्य की और नल के पानी की दशा एक जैसी होती है। जितना नीचे होकर अर्थात विनम्र होकर (गर्व छोडकर) रहा करते हैं, ये दोनों उतने ही ऊँचे हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अहकार को त्यागना और नम्रता को अपनाना श्रेष्ठता का लक्षण है

5. कोई करोडों की संपत्ति इकट्ठा करता है तो कोई लाखों, हज़ारों की। मेरी संपत्ति तो सदा केलिए श्रीकृष्ण है जो संकट को नष्ट कर देते हैं। अतः यही संपत्ति सबसे श्रेष्ठ है। कहने का तात्पर्य यह है कि श्रीकृष्ण ही सर्वश्रेष्ठ धन है, बाकी धन-दौलत उसके सम्मुख कुछ भी नहीं।

शब्दार्थ

1.	भव-बाधा	-	सांसारिक बाधाएँ
	नागरि	-	चतुर।
	सोइ	-	वही
	झाई	-	परछाई।
	हरित	-	हरि, प्रसन्न
	दुति	-	चमक
2.	कनक	-	सोना।
	कनक	-	धतूरा
	ते	-	से।
	मादकता	-	पागल बनाने की शक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिकाय - बढ जाता है।

वा - यहाँ धतूरे से मतलब है।

या - सोने से मतलब है।

3. चहूँ पास - आसपास

नितप्रति - रोज़

पून्यौई - पूनम का चाँद (पूर्णमासी)

आनन - मुख।

उजास - उजाला

4. नर - मनुष्य।

नल नीर - नल के पानी

गति - दशा।

एकै करि - एक सी ही

जोइ - देखो।

जेतौ - जितना हो।

नीचौ है - नम्र होकर, गर्व न करके

तेतै - उतना ही।

ऊँचौ होइ - ऊँचा हो जाता है, श्रेष्ठ बन जाता है।

5. कोऊ - कोई।

कोटिक - करोडों

संग्रहों - इकट्ठा करे।

मो - मेरी

जदुपति - श्रीकृष्ण।

बिपति - संकट

बिदारनहार - हटानेवाले, नष्ट करनेवाले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले चल वहाँ भुलावा देकर

जयशंकर प्रसाद

रचना परिचय

ले चल वहाँ भुलावा देकर प्रसाद जी के 'लहर' काव्य ग्रंथ से ली गयी कविता है। 'लहर' उनकी प्रौढ एवं गहन अनुभूतिजन्य भावनाओं की चित्रपटी है, जिस पर विविध भावों के रंग-बिरंगे चित्र निर्मित हुए हैं। लहर उनकी आत्मपरक रचनाओं का संकलन है। उनमें ले चल वहाँ भुलावा देकर सर्वाधिक चर्चित रचना है। कुछ विद्वान आलोचकों को इस कविता में प्रसाद जी का पलायनवादी स्वर सुनाई देता है। लेकिन कुछ विद्वानों को इसमें समरसता सिद्धान्त की अनुगुँज सुनाई देती है। वास्तविकता यह है कि कवि ने यहाँ भौतिक संघर्ष का वह जीता जागता चित्र दिया है, जहाँ निरन्तर कोलाहल छल-कपट, मिथ्या-वैभव, विषमता, आडंबर प्रियता अहंकार आदि का बोलबाला है। यहाँ एक मानव दूसरे को शत्रु बनकर उसे दिन रात नीचा दिखाने केलिए उद्यत रहता है। इस कारण कवि छल-प्रपंच से एवं कोलाहल से भरे हुए संघर्षपूर्ण भू-भाग को छोडकर इसी जगत के ऐसे मनोरम वातावरण में जाने की कामना प्रकट करता है, जहाँ समुद्र की लहर चुपचाप आकाश के कानों में निश्चल प्रेमकथा कह रही हो।

प्रसाद जी ने 1931 में सपरिवार कोलकाता तथा जगन्नाथपुरी की यात्रा की थी। प्रस्तुत गीत उन्होंने पुरी के समुद्र तट पर बैठकर लिखा था। दूर क्षितिज पर समुद्र की लहरें आकाश को चूमती हुई प्रतीत होती थी। कवि वहाँ जाने को उत्सुक थे। क्योंकि वे कोलाहलमय संसार में अपने को ऊबा हुआ पाते थे और नाविक से यही कामना करते हैं कि उन्हें भूलावा देकर उस जगत की ओर ले चल, जहाँ छल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कपट दंभ, अहंकार आदि न हो, जहाँ प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण हो। यहाँ नाविक ब्रह्म का प्रतीक है। वह संसार सागर को पार लगानेवाला है। संसार सागर चलचित्र पट की तरह मायात्मक है। इसलिए जीव निश्छल प्रेम की दुनिया का आकांक्षी है। अन्त में परब्रह्म उषाबेला रूपी नेत्रों से अमर जागरण का सन्देश देता है। कविता में जीवन संघर्ष से पलायन नहीं बल्कि उसके प्रति वितृष्णा का भाव प्रकट होता है।

शब्दार्थ

भुलावा - धोखा
अवनी - धरती
निर्जन - जनशून्य
विभु - विराट पुरुष
विभूत - प्रकृति का विराट स्वरुप

विधवा

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

काव्य परिचय

विधवा हिन्दू समाज में सबसे अभिशप्त एवं उपेक्षित प्राणी है। जीवन भर विविध यातनाओं की ज्वाला में जलती रहने के कारण उसका जीवन जर्जर हो जाता है। निराला ने अपनी कविता के प्रारंभ से ही पददलित और उपेक्षित नारी के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की है। विधवा शीर्षक कविता में हिन्दू विधवा का जो चित्र खींचा गया है उसमें मानों विश्व की समग्र करुणा धनीभूत हो गयी है। कवि ने तपस्विनी का जीवन व्यतीत करनेवाली विधवा को इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्मानित किया है कि उनकी दृष्टि में वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सदृश है। इससे उसकी सौम्यता और पवित्रता का आभास मिलता है। दीपशिखा की भाँति अनवरत दुख की ज्वाला में जलती हुई शान्त है। उसका अशान्त होना समाज को असह्य है। टूटे तरू की छुटी लता कहने से अनेक कारुणिक भावों की व्यजंना होती है। मृत पति केलिए टूटे तरू का अप्रस्तुत अत्यन्त सार्थक है। 'छुटी लता' में विधवा की निराश्रयता का बोध कराया गया है। 'व्यथा की भूली हुई कथा'कहकर तो मानो उसे करुणा की प्रतिमूर्ति ही बना दिया गया है। प्रस्तुत कविता बडी ही संवेदनशील एवं भावपूर्ण है।

शब्दार्थ

षड्‌ऋतु - वर्ष के छः ऋतु

(वे हैं - ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमन्त, शिशिर, वसन्त)

स्वच्छन्द - स्वेच्छानुकूल आचरण करनेवाला

विहार करना - मनोरंजन केलिए घूमना या सैर करना

सुहाग - स्त्री की सधवा स्थिति

मन-मधुकर - मन रूपी भौंरा

पाँख - पंखुडी

त्रस्त - भयभीत

धीरज - धैर्य

छोर - किनारा, सीमा

सर गया - सरक गया, खिसक गया

झर - झरना, निर्झर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह मनुज

रामधारी सिंह दिनकर

रचना परिचय

इस कविता में श्री दिनकर ने अपना यह मत प्रतिपादित किया है कि विज्ञान का चाहे जितना ही विकास क्यों न हो जाए। मनुष्य दूर-से-दूर के ग्रहों पर पहुँच जाए। वह समुद्र, पहाड, हवा, वर्षा आदि पर काबू पा ले; उसके कर्म जब तक हिंसा से शून्य और परस्पर केलिए कल्याणकारी नहीं होंगे तब तक वह सही अर्थों में 'मनुष्य' कहलाने का अधिकारी नहीं होगा। युद्ध या हिंसा को बुरा बतलाते हुए यहाँ कवि ने आपसी प्रेम और सद्भाव पर बल दिया है।

शब्दार्थ

उद्दाम	-	उग्र, भयंकर
आगार	-	खजाना, भंडार
मृत्यु-विषाण	-	मौत के बाजे
कुक्कुर	-	कुत्ता।
संहार-सेवी	-	विनाश-प्रेमी
भृत्य	-	दास, नौकर।
पाषण्ड	-	ढोंग
श्रेय	-	कल्याण।
चैतन्य उर	-	चेतन हृदय
व्यवधान	-	बाधा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकलव्य

कीर्ति चौधरी

रचना परिचय

एकलव्य कविता महाभारत के प्रसंग से जुडी हुई है। एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाई थी। उस मूर्ति को जीवन्त गुरु समझकर एकलव्य ने उसके प्रति पूर्ण समर्पण किया। जब द्रोणाचार्य ने उससे दाहिने अँगूठे की माँग की तो उसे बडा आश्चर्य हुआ। उसने द्रोणाचार्य से कहा कि मेरा साध्य और साधन सब कुछ पहले ही गुरु के प्रति समर्पित हो चुका है। बाण, धनुष की डोर, हाथ हाथ की गति सब कुछ जैसे गुरु के चरणों में चढे हुए पुष्प हों जिनके प्रति अपना सिर झुकाया था। लेकिन अचरच है गुरु इस समर्पण से अनजान हैं, इसके माने वह प्रतिमा वास्तव में मिट्टी की ही प्रतिमा थी।

एकलव्य द्वारा गुरु की मूर्ति की पूजा और साधना की कथा के माध्यम से कवि ने एक शाश्वत प्रश्न की ओर इंगित किया है। संसार में व्यक्ति का समर्पण भी पर्याप्त नहीं होता। सत्ता जिसके हाथ में है वह निर्ममता से उसका शोषण करता है तथा नैतिक मूल्य धरे-के-धरे रह जाते हैं।

शब्दार्थ

समर्पित - अर्पण किया हुआ
उपलक्ष्य - उद्देश्य, अनुमान
साध्य - लक्ष्य
प्रत्यंचा - धनुष की डोरी
निर्माल्य-सा - शुद्धता से
सिर नवाया - सिर झुकाया
अभिज्ञ - न जान सकना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निष्ठा - विश्वास

आकुल - व्याकुल

बन्द खिडकियों से टकराकर

गोरख पाण्डे

रचना परिचय और व्याख्या

फिलहाल नारीवादी आन्दोलन के प्रभाव से कवि लोग, समाज में नारी की हैसियत पर चिन्तित हैं। व्यवस्था एवं पुरुष दोनों के शोषण की शिकार नारी की अस्मिता, उसके दूसरे दर्जे की हैसियत और घर एवं बाहर उसके साथ होते अत्याचार आदि पर कविताएँ बराबर प्रकाशिन होती जा रही हैं।

लेकिन बरसों पहले जब नारीवादी आन्दोलन इतना मज़बूत नहीं था, तब गोरख पाण्डे ने स्वातंत्र्योत्तर आधुनिक भारत में जीती नारी की बदहालत और बदनीयत का जो दिलकश चित्रण 'बन्द खिडकियों से टकराकर शीर्षक कविता में किया है, वह बिलकुल अनुपम बन गया है।

नारीवर्ग सारी मानव-जाति का आधा हिस्सा है। लेकिन उसे पुरुष के समान मानवता की एक अनिवार्य संज्ञा के रूप में मान्यता हासिल नहीं हुई है। उसका अस्तित्व पुरुष सापेक्ष है। वह पुरुष की अनुचरी है, सहचरी का दर्जा अब तक प्राप्त नहीं है। पुरुष जन्मजात ही पुरुष बनता है लेकिन स्त्री को स्त्री बनने केलिए कुछ खास अदाओं और आचरणों को अपनाना पड़ता है।

सुरक्षा के नाम पर पुरुष ने उसे घर के अन्दर बन्द रखा है। इतना ही नहीं उसे इतना सताया है कि बन्द खिडकियों से टकराकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका सिर लहूलुहान होता है और चक्कर खाकर वह गिर पडती है। नई बहू घर की लक्ष्मी मानी जाती है। वह पुरुष यानी पति के सपनों की रानी है। कुल की इज्जत होती है। उसी को दहेज के नाम पर सास-ससुर और पति भी साथ-मिलकर ज़िन्दा जलाते हैं।

एक मशहूर कहावत है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं। लेकिन आधुनिक भारत में आस्था के नाम पर स्त्री को पति की चिता पर सती होने केलिए मजबूर किया जाता है, कभी उसे जबरदस्ती से धकेल भी दिया जाता है। उसी सती-स्थल पर मन्दिर बनाया जाता है, लाखों रुपये कमाने का आसान तरीका अपने आप खुल जाता है। यों नारी देवी बनती है और उसकी बेरोक-टोक पूजा भी होती है।

नारी पतिव्रता सीता है, उसके प्यार में एकनिष्ठता है, वह सावित्री है, अपने पति केलिए सब कुछ कर सकती है, लेकिन सम्बल के बिना गिर पडती है।

कानूनन स्त्री पुरुष के बराबर है। यह स्वतन्त्र भी है। इसके साथ पुरुष केलिए धन कमाने का यन्त्र भी है। घर में पत्नी की कमाई पर पति का हक है। अपनी कमाई को भी नारी अपनी मर्जी से खर्च नहीं कर सकती। नारी की पूजा, शोषण और इस्तेमाल करनेवाले आखिर यह भूल जाते हैं कि नारी भी इन्सान है। उसे प्यार चाहिए; साँस लेने केलिए खुली हवा चाहिए। सुरक्षा और एकनिष्ठ प्रेम के नाम पर उसे दीवारों और पर्दे के भी तरह बन्द रखना जुल्म है, हैवानियत है।

नारी इनसान के रूप में जीना चाहती है। लेकिन वह हिफाजती दीवारों के घेरे में घुट घुट कर मर रही है। क्या इसे जीना कह सकेंगे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हकीकत यह है कि नारी केलिए अपना घर तक श्मशान घाट है। सास-ससुर और पति उसे ज़िन्दा जला देते हैं। मायके में वह बचपन से पक्षधरता की शिकार रही है। घर में भाई की तुलना में उसका स्थान नीचा है। कभी कभी उसके जन्म लेने के अधिकार तक को बुरी तरह मिटाया जाता है। फिलहाल कन्या भ्रूण की हत्या एक आम बात हो गयी है।

नारी केलिए अब घर फाँसी घर बन गए हैं। कितनी बहुएँ अत्याचांर की वजह से अपने को फाँसी के फन्दे में फँसाती है। सचमुच जब वह अपने को मिटाती है; आधी दुनिया ही मिट जाती है। जब वह खिडकी से टकराकर गिरती है आधा संसार ही गिर जाता है। मनुष्यता ही परास्त होती है, उसका ही अवमूल्यन होता है।

जिस समाज में नारी की अवनति होती है, उसकी निर्मम हत्या की जाती है, वहाँ मनुष्यता श्रेष्ठ नहीं रहेगी। नारी की बुरी हालत केलिए जो ज़िन्दा है, वे सब उत्तरदायी हैं। सब अपराधी हैं। सबको अवश्य सजा मिलनी चाहिए।

शब्दार्थ

लहूलुहान - खून से लथपथ
धन का एक यन्त्र - धन कमाने का यन्त्र (नारी का शरीर)
इज्जत - प्रतिष्ठा, आदर
कानूनन - राजनियम, विधान
दण्डित - दण्डित किए जाने योग्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुवाद

English to Hindi
Model Translation

Today is new year's day. The year which was till yesterday has gone away for ever. It will never come back now. The current of time is incessant and everlasting. The previous year has gone. The new year has started now. The flow of time is just like the current of river. The river flows and vanishes in the endless ocean, even then it goes on flowing. The previous year has ended and vanished in the infinite time.

आज साल का पहला दिन है। जो वर्ष कल तक था, वह सदा केलिए चला गया है। अब वह वापस नहीं आयेगा। समय का प्रवाह अजस्र और निरन्तर है। पिछला साल बीत गया। अब नया साल चालू हुआ। जलधारा की तरह ही समय की धारा है। नदी बहकर अनन्त समुद्र में विलीन होती है, फिर भी बहती रहती है। पिछला साल समाप्त होकर अनन्त काल में विलीन हो गया।

1. Books are our real friends. They always help us. When we are in difficulty they show us the right path. In sorrow they give us comfort. They are always with us. Some of our friends remain with us only in the days of happiness. When sorrow comes they leave us alone. They are not true friends. But books are not like them. They are our true friends.

right path - सच्चा मार्ग
sorrow - दुख
comfort - आश्वासन
remain - रहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

happiness - सुख
leave - छोड़ना
alone - अकेला
true - सच्चा
effect - प्रभाव
reader - पाठक
careful - सावधान

2. Tea has become very popular. In almost every home in a city or a town you find people taking tea at breakfast. Whenever you go to a friend, he offers you a cup of tea. The habit of drinking tea is ever on the increase, but very few people know how to prepare good tea. To prepare good and tasty tea is an art and this has to be learnt and practised.

popular - लोकप्रिय
almost - प्राय:
breakfast - नाश्ता, कलेवा।
whenever - जब कभी
offers - भेंट करना
habit - आदत
Ever on the increase - निरन्तर बढ रही है।
very few - बहुत कम
prepare - बनाना
Tasty - स्वादिष्ट
practice - अभ्यास

3. Kerala is the smallest state in South India. This state is famous for its natural beauty. Tourists come to India to enjoy this beauty.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Kerala's greenary is very attractive. This beautiful land between the Sahyadri and the Arabian sea is full of beautiful trees and plants. There are so many small rivers in Kerala Keralites are highly interested in education.

Natural beauty	-	प्राकृतिक सौन्दर्य
tourist	-	पर्यटक
greenary	-	हरियाली
Attractive	-	मनमोहक

4. It is true to say that service to man is a service to God. Tagore says that God is to be found with the poor toiling people. If we lend a helping hand to a person in need, if we comfort to a troubled mind, if we wipe out tears from a poor man's eyes we certainly serve God through our selfless acts. God loves those who love their fellow beings. So the best way to serve God is to serve humanity.

Service	-	सेवा
toiling people	-	कठिल परिश्रम करनेवाले लोग।
person in need	-	ज़रूरतमंद आदमी
troubled mind	-	अशान्त मस्तिष्क
wipe out tears	-	आँसू पोंछना
selfless act	-	निःस्वार्थ कार्य
best way	-	श्रेष्ठ मार्ग
to serve humanity	-	मानवता की सेवा करना।

5. The Taj Mahal is a very famous building. It is one of the wonders of the world. It is situated at Agra on the right bank of the Yamuna. It was built by Shah Jahan. He built in it the memory of his dear

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

wife Mumtaz Mahal. People come from far and wide to see this historical building. Hundreds of years have passed but its beauty is the same as it was, when it was built.

very famous building - अत्यन्त प्रसिद्ध भवन
wonder - आश्चर्य
right bank - दक्षिणी तट
memory - स्मृति
historical building - ऐतिहासिक भवन
Hundreds of years have passed - सैकडों वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

6. Sidharta was born in a royal family in India. His father wanted to keep him always happy. Sidharta was not allowed to move out of his palace. This was a turning point in his life. He wanted to find out the cause of worries. He left his palace. Through proper meditation he become enlightened. He came to be known as Budha.

Royal family - शाही परिवार
not allowed - अनुमति नहीं देता था
turning point - मोड
meditation - ध्यान
enlightened - प्रबोधित

7. Student life may be regarded as the best period of our life. The future of a boy can be often safely predicted by observing his career as a student. At this period the mind of the student is plastic and is susceptible to influences, good or bad, and he must take special care in choosing his friends. If the student always moves in good circles, his associates will help in moulding his character.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

regarded	- माना जाता।
future	- भविष्य
period	- काल।
predict	- भविष्य वाणी देना
career	- जीवन
susceptible	- शिकार
character	- चरित्र।
choosing	- चुनना
mould	- रूप देना।

8. Travelling is an essential part of education. Through the books we read we get only theoritical knowledge. But practical knowledge is obtained only by travelling. We come to know of different people with different manners and customs. We can see their mode of living and dress. We can hear their different languages. Travelling develops our knowledge and outlook.

travelling	- देशाटन
essential	- परम आवश्यक
part	- भाग
theoretical	- सैद्धान्तिक
practical knowledge	- व्यावहारिक ज्ञान
manners	- रीति रिवाज़
customs	- आचार
mode of life	- जीवन का ढंग
dress	- पोशाक
out look	- दृष्टिकोण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. Mahatma Gandhi was born in Porbander on the second day of October 1869. His father was a Minister of Rajkot. He spent the early part of his childhood at Rajkot. He got married at an early age. After his studies in schools at Rajkot, he went to England for higher studies. His ambition was to be an advocate. He returned to India and joined the Indian National Congress. He became President of the Indian National Congress. He fought many battles for the freedom of India. He defeated the British Government by the unique weapons of 'Sathyagraha' and 'Non violence'. He was one of the Greatest messengers of peace, truth, love and Non violence.

Minister	-	दीवान
childhood	-	बचपन
early part	-	पूर्व भाग
early age	-	छोटी उम्र
higher education	-	ऊँची शिक्षा
ambition	-	आशा
President	-	अध्यक्ष
to defeat	-	पराजित करना
unique weapon	-	बेजोड हथियार

10. Peace is necessary for progress. Peace leads to prosperity. War is more dangerous than natural calamities. If man wants to progress he should develop wisdom. Economists say that poverty any where, affects prosperity everywhere. We can say, idiotic ambition of the head of state may affect peaceful life anywhere. Nobody will exist in this world to write the history of the third world war; if it occurs. Peace is necessary even for the existence of humanity.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Progress	-	प्रगति
Prosperity	-	संपन्नता
Natural calamities	-	प्राकृतिक विपत्ति
Economists	-	अर्थशास्त्री
idiotic ambition	-	मूर्खतापूर्ण महत्वकांक्षा
Existence	-	अस्तित्व

अनुवाद

Hindi to English

Model Translation

तैरना बहुत अच्छी और आन्ददायक कसरत है। वह बहुत आमोद और सन्तोष देता है। लगभग सभी जीवी पानी में तैर कर सकते हैं और उनको तैर करना नहीं पढाया जाता। लेकिन तैर करने को पढाये बिना मनुष्य पानी में तैर नहीं कर सकता। बहुत से लोग बाढ में अपने जीवन को नष्ट कर देते हैं। इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि हरएक आदमी को अपने बचपन से ही तैर करना सीखना चाहिए। गर्मी के दिनों में ठंडे पानी में तैर करना बहुत आनन्दप्रद अनुभव है।

Swimming is a very good and pleasant exercise. It gives much pleasure and happiness. Almost all creatures can swim in water and they are not taught to swim in water. But a man can not swim in water without being taught. Many people lose their lives in flood. Therefore it is necessary that every one should learn to Swim from one's own childhood itself. It is a very pleasant experience to swim in cold water in summer days.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. ग्रामीण लोग यहाँ अधिकतर निरक्षर है। वे छोटी छोटी बातों पर आपस में लडते रहते हैं। जब-तब वे न्यायालयों में जाते रहते हैं और अपना काफी पैसा व्यर्थ गँवाते हैं। एक बार एक गॉव वाले ने अपने एक पडोसी के विरुद्ध मुकदमा दायर किया। उसने अपने पडोसी पर यह आरोप लगाया कि इसने मेरे मवेशी चुराए हैं। उसने कई गवाह पेश किए। पडोसी ने न्यायालय को बताया कि उसके पशु उसकी फसल बरबाद कर रहे थे। उसने भी कई गवाह पेश किए। मजिस्ट्रेट ने जाँच केलिए आदेश दिया। जाँच से पता चला कि पहले आदमी के कोई पशु नहीं थे और दूसरे की कोई फसल नहीं थी।

निरक्षर	-	illiterate
ग्रामीण लोग	-	villagers
लडना	-	to querrel
चुराना	-	to stole
मवेशी	-	cattle
गवाह	-	witness
पेशकरना	-	to produce
छोटी छोटी बात	-	Petty matters
पैसा व्यर्थ गॅवाना	-	to waste money
मुकदमा दायर करना	-	to file a suit
पडोसी	-	neighbour
to distroy	-	बरबाद करना
crop	-	फसल
जाँच	-	enquiry

2. भारत आगे बढ रहा है और उज्जवल भविष्य का सपना देख रहा है। यह देश प्रकाश से भरा हुआ था और सारे संसार में प्रकाश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फैलाने की क्षमता रखता था, किन्तु अनेक कारणों से यहाँ इतना अन्धकार घर गया कि प्रकाश धुँधला रह गया। आगे बढने के जोश में हम अपने अतीत को भूल नहीं सकते। अपनी ही सांस्कृतिक आधार शिला पर हमें एक भव्य भवन खडा करना है। उसमें हमारी पुरानी उपलब्धियों की झलक होनी चाहिए। अतीत की असफलताओं से सीखे नये सबक उस भवन को समृद्ध बनाने में सहायक होंगे। हमें अपनी महान संस्कृति पर गर्व करने का अधिकार है। साथ ही हमें अपनी पुरानी गलतियों को ठीक करने का दायित्व भी है।

उज्ज्वल भविष्य	- glorious future
क्षितिज	- Horizon
धुँधला	- Obscure/dim
जोश	- Zeal
आधार शिला	- foundation stone
उपलब्धियाँ	- achievements
झलक	- glimpses
सबक	- lesson
दायित्व	- Responsibility

3. समाज का जीवन्त इतिहास साहित्य है। समाज की अनुभूतियाँ और उसका संघर्ष ही साहित्य है। समाज से परे साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। साहित्य विषय का रूप भी है और सत्जीवन की स्थापना का माध्यम भी। साहित्य भूत, वर्तमान और भविष्य का संगम है। वह समाज की अक्षय और अमर शक्ति है। जिस जाति के पास जितना समृद्ध साहित्य है, वह जाति उतनी ही उन्नत और श्रेष्ठ है। इस तरह साहित्य समाज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की कसौटी है। उसका मूल्यांकन है। साहित्यकार नवसृष्टि का प्रणेता है। इसकारण उसकी कर्मभूमि तथा उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण है।

कसौटी	-	touch stone
मूल्यांकन	-	evaluation
प्रणेता	-	creator
कल्पना	-	imagination
माध्यम	-	medium
संगम	-	meeting/assembling
उत्तरदायित्व	-	duty

4. किसी राष्ट्र में सर्वाधिक प्रयोग होनेवाली भाषा ही वहाँ की राष्ट्रभाषा है। वह शासन तथा जनता दोनों द्वारा मान्य होती है। उसी भाषा में देश का राजकाज होता है। भाषा राष्ट्र की आत्मा है। जिस तरह कोई व्यक्ति दूसरे की आत्मा उधार लेकर जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के जरिये जीवित नहीं रह सकता। उसकी अपनी भाषा ही उसे उन्नति के शिखरों तक पहुँचा सकती है।

राष्ट्रभाषा	-	National language
शासन	-	Government
मान्य	-	respectable
राजकाज	-	public affairs
आत्मा	-	soul
उधार	-	loan
भाषा के जरिये	-	medium of language

5. पर्यावरण के प्रदूषण पर नियन्त्रण रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो समस्त मानव-जाति केलिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भयानक खतरा उत्पन्न हो जाएगा। प्रदूषण को रोकने केलिए कानून बनाना जितना आवश्यक है, उतना ही महत्वपूर्ण है, इन कानूनों को कार्यान्वित करना। मिलों और कल-कारखानों का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए। जहाँ पर अधिक मात्रा में आबादी है, उन स्थानों पर कारखाने लगाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। जनता को प्रदूषण की समस्या से भली-भांति अवगत करवाना चाहिए। उन्हें इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए कि सफाई उनके हित में है।

कार्यान्वित करना	-	to implement
आधुनिकीकरण	-	modernisation
खतरा	-	danger
प्रदूषण	-	pollution
कानून	-	law
सफाई	-	cleanliness
हित	-	welfare, benefit
कार्यान्वित करना	-	to implement
कारखाना	-	factory
आबादी	-	population
अवगत करना	-	to inform
शिक्षा	-	Education

6. पत्रों को खोलने से पहले देखना चाहिए कि उनका पता ठीक है या नहीं। गलती से वितरित पत्रों को डाक-खाने में वापस कर देना चाहिए। व्यक्तियों के नाम आये पत्रों को अलग रखना चाहिए। कुछ ग्राहक व्यापारिक पत्रों को व्यक्तिगत नामों पर लिखा करते है। ग्राहकों को यह सूचित करना उचित है कि सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्र संस्था के नाम पर भेजे जाएं। लेकिन विशेष विभागों के नाम पर आये पत्रों को खोले बिना ही उनको देना चाहिए।

ग्राहक	-	customer
व्यापारिक	-	business
विभाग	-	department
वितरित	-	distributed
संस्था	-	Institution
डाक-खाना	-	post office
वापस करना	-	to return
अलग	-	separate
खोलना	-	to open
पता	-	adress

7. देश की उन्नति बच्चों पर निर्भर है। वे देश के मेरुदण्ड हैं। आज का बच्चा कल का नागरिक है। अतः उनकी देख-रेख भली भाँति करनी है और उनकी शिक्षा का भी समुचित प्रबन्ध करना है। बाल्यकाल से ही बच्चों के मन में इच्छाएँ जाग उठती है। कोई चित्रकार बनना चाहता है तो कोई वकील या डॉक्टर। परन्तु उनके माता-पिता उनकी इच्छाओं की ओर ध्यान दिए बिना उन्हें अपने साँचे में ढालते हैं। ऐसे बालकों से आगे चलकर समाज का कल्याण न हो पाता।

मेरुदण्ड	-	spinal cord
कल्याण	-	welfare
साँचे में ढालना	-	to mould
नागरिक	-	civilian
देख-रेख	-	supervision, guidance, care

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रबन्ध - management, arrangement
समुचित - proper
बाल्यकाल - childhood
इच्छा - desire, wish

8. कृतज्ञता मानव के महत्वपूर्ण सद्गुणों में एक है। यह मानव की सज्जनता का भी निशान है। कृतज्ञता प्रकट करके हम अपने मददगारों को प्रसन्न कर सकते हैं। कृतध्नता संसार का सबसे बडा पाप है। जन्म से मृत्यु तक मानव को दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है। दूसरों की सहायता के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। अतः आवश्यकता के अनुसार एक दूसरे की सहायता करना सबका नैतिक कर्तव्य है। हमारी मदद करनेवालों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

कृतज्ञता - gratitude
मददगार - helper
सद्गुण - good quality
मददगार - helper, supporter
प्रसन्न करना - to please, to make happy
कृतध्नता - ungrateful
पाप - sin
नैतिक कर्तव्य - Moral responsibility
कृतज्ञता का भाव - feeling of gratefulness

9. मुझे एक घटना याद आ रही है। मैं शान्तिनिकेतन में नया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में निकला करते थे। मैं भी एक दिन उनके साथ हो लिया। मेरे साथ एक पुराने अध्यापक थे। हम तीनों बगीचे में घूम रहे थे। मौसम सुहावना था। अभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूर्योदय नहीं हुआ था। आधा घंटे तक घूमकर हम अपने अपने घर लौटे।

घटना	-	incident
मुझे याद आ रही है	-	I am remembering
मैं भी उनके साथ हो लिया	-	I also accompanied him
मौसम	-	weather
सुहावना	-	pleasant
लौटना	-	to return
आधा घंटा	-	half an a hour.

10. प्रत्येक समाज की उन्नति और अवनति उसके महापुरुषों की विचारधारा पर अवलंबित है। पिछली शताब्दी में महात्मा गाँधी ने भारतीय समाज पर सबसे अधिक प्रभाव डाला। विदेशी शासन को समाप्त कर भारत को स्वतन्त्र बनाने केलिए भारत में जो संग्राम हुआ उनका नेतृत्व मुख्यतः महात्मा गाँधी ने किया। जवाहरलाल नेहरू, पटेल आदि महान राजनीतिज्ञ कई मामलों में गाँधी जी से मतभेद रखते थे। लेकिन वे सब, उनका नेतृत्व स्वीकार करनेकेलिए तैयार हो गए। सुभाष चन्द्र बोस और भगतसिंह जैसे वीर पुरुषों की विचारधारा गाँधीजी की अहिंसात्मक विचारधारा से भिन्न थी, लेकिन लक्ष्य सबका एक था। हम लोग उन सबके ऋणी हैं।

उन्नति	-	advancement/rise
अवनति	-	Deterioration
विचारधारा	-	Ideology
संग्राम	-	fight
मतभेद	-	Difference of opinion

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋणी - indebted
स्वीकार करना - to accept
लक्ष्य - goal

पारिभाषिक शब्दावली
अग्रेज़ी - हिन्दी

Advance - अग्रिम
Agent - अभिकर्ता
Auditor - लेखा परीक्षक
Appendix - परिशिष्ट
Agreement - अनुबन्ध
Assured - बीमित
Approval - अनुमोदन
Administration - प्रशासन
Audit - लेखा परीक्षा
Balance sheet - तुलन पत्र
Balance of payments - भुगतान शेष
Book credit - खाता उधार
Contract - संविदा
Coding - बीजांकन
Concurrence - सहमति
Discount - बट्टा
Divident - लाभांश
Despatch - प्रेषण
Draft - प्रारूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Director - निदेशक
Editor - सम्पादक
Enclosure - संलग्नक
Endorsment - पृष्ठांकन
Estimate - अनुमान/प्राक्कलन
Exchange - विनिमय
Export - निर्यात
follow up - अनुवर्तन
financial year - वित्त वर्ष
Gazetted officer - राजपत्रित अधिकारी
Grant - अनुदान
Honorarium - मानदेय
Import - आयात
Investment - निवेश
Inflation - स्फीति
Invoice - बीजक
Joining date - कार्यग्रहण तारीख
Judiciary - न्यायपालिका
Liaison officer - संपर्क अधिकारी
Liability - देयता
Margin - लाभ-सीमा
Minutes - कार्यवृत्त
Non-official - गैर सरकारी/अशासनिक
Notification - अधिसूचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Office Memorandum - कार्यालय ज्ञापन
Parliament - संसद
Pay scale - वेतनमान
Quorum - गणपूर्ति
Receipt - आवती
Recruitment - भर्ती
Registration - पंजीकरण

हिन्दी - अंग्रेज़ी

आचार्य - Professor
प्रधानाचार्य - Principal
आशुलिपिक - Stenographer
उद्योगपति - Industrialist
कुलपति - Vice Chancellor
कुलाधिपति - Chancellor
अनुपात - Ratio
अर्थशास्त्र - Economics
अनुमोदन - Approval
अभिलेख - Record
आरक्षण - Reservation
आयकर विभाग - Income Tax Department
उच्च न्यायालय - High court
उच्चतम न्यायालय - Supreme court
पत्रकार - Journalist
प्रमाण पत्र - Certificate

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर्यवेक्षक - Supervisor
मानकीकरण - Standardisation
मूल प्रति - Original copy
मुआवजा - Compensation
परिषद - Council
मजूरा - Sanction
छात्रावास - hostel
पदोन्नति - promotion
मनोनीत - Nominated
पुनर्वास - Rehabilitation
वाहक - Bearer
वचन पत्र - Promissory Note
संशोधन - Amendment
भत्ता - Allowance
कार्यसूची - Agenda
सलाहकार परिषद् - Advisory Council
समायोजन - Adjustment
कार्य समिति - Action committee
विसंगति - Anomaly
दुराचरण - Bad conduct
काली सूची - Black list
विश्वासधात - Breach of trust
नौकरशाही - Bureaucracy
रोकड - Cash

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझौता	- compromise
पुष्टि	- confirmation
उपभोक्ता	- comsumer
ठेकेदार	- contractor
निगम	- corporation
प्रचलित मुद्रा	- Currency
आयकर विभाग	- Income Tax Department
कर्मचारी चयन आयोग	- Staff Selection Commission
परिचालन	- Circulation
संवाददाता	- Correspondent

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशन विभाग, केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant